सोशल मीडिया से जुड़ें
Parivehan_Vishesh

RNI No :- DELHIN/2023/86499
DCP Licensing Number :
F.2 (P-2) Press/2023

www.newsparivahan.com

परिवहन विशेष

वर्ष 02, अंक 213, नई दिल्ली । शनिवार, 12 अक्टूबर 2024, मूल्य ₹ 5, पेज 8

देश का पहला ट्रांसपोर्ट दैनिक समाचार पत्र

03 आम आदमी पार्टी को 10 साल बाद दिल्ली के गांवों में विकास...
06 भारतीय संस्कृति पर मीडिया का प्रभाव
08 रावण दहन का भव्य कार्यक्रम आयोजित

दिल्ली में युद्धस्तर पर प्रदूषण नियंत्रण की तैयारी पर क्या परिवहन आयुक्त होने देंगे कामयाब

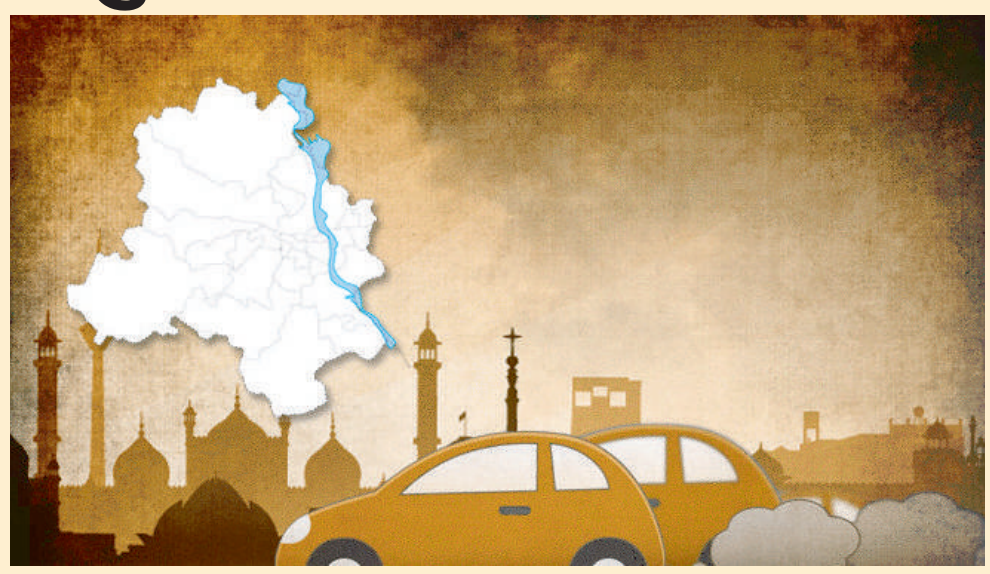

संजय बाटला

नई दिल्ली। वायु गुणवता आयोग, प्रदूषण नियंत्रण कमेटी और दिल्ली सरकार की बाते माने तो इस बार दिल्ली में वायु गुणवता को बनाए रखने के लिए उनकी तरफ से युद्धस्तर पर तैयारी है और हर हालात में वायु गुणवता बनाए रखने के प्लान और फौज तैयार है। **यह एक अच्छी खबर है दिल्ली वासियों के लिए पर इसमें एक बड़ा शक है की क्या परिवहन आयुक्त इस प्लान को कामयाब होने देंगे।** हमारा शक यहां बिना वजह नहीं है क्योंकि सफलता तभी हासिल होगी जब निर्णय पूर्ण रूप से कार्यान्वित होंगे पर इसमें सबसे मुख्य बात जो सामने आई है वह है दिल्ली में व्यवसायिक श्रेणी के वाहनों को इलैक्ट्रिक वाहनों में लाना। जिसके लिए भारत सरकार तो भरसक प्रयास कर रही है पर दिल्ली में आज कि तारीख में आसिन परिवहन आयुक्त ओर विशेष परिवहन आयुक्त की भूमिका कुछ और ही सिद्ध कर रही है। दिल्ली में कार्यरत विशेष परिवहन आयुक्त शहजाद आलम और आयुक्त दिल्ली में व्यवसायिक श्रेणी में आए हुए वाहनों को पंजीकरण होने से रुकवाने में कार्यांवत है तो ऐसे में किस आधार पर दिल्ली में व्यवसायिक श्रेणी में इलैक्ट्रिक वाहनों को इस युद्धस्तर की गतिविधि में शामिल कर वायु गुणवता सम्भव होगी। दूसरा दिल्ली में सड़कों और सड़कों के किनारों में इतना गंदगी का ढेर है जो वायु गुणवता को बने रहने में रुकावट पैदा करेगा ही करेगा। तीसरा सड़कों पर इतने अधिक गड्ढे है जो वायु गुणवता बनाए रखने में सफलता प्राप्त करने में रुकावट बनेंगे ही बनेंगे। चौथा दिल्ली की सड़कों का जाम जिसको खत्म करने के मूलभूत प्रयास किए ही नहीं जा रहे और इससे भी वायु गुणवता बने रहने में रुकावट पैदा होगी ही होगी।

अब प्रश्न उठता है की क्या सिर्फ ओड इवन लगाने से, कारोबार पर रोक लगाने से या वर्क फ्रॉम होम करवाने जैसे तरीकों से दिल्ली में वायु गुणवता बन जायेगी या सच में वायु गुणवता को खराब करने वाले कारणों का सही तरीका इस्तेमाल कर उन को ठीक कर स्थायी वायु गुणवता दिलवाने का कार्य होगा।

घोषणाएं तो पिछले कई सालों से सुनी जा रही है अब की बार भी सिर्फ खोखली घोषणाएं ही रहती है या सच में दिल्ली की जनता को अच्छी वायु प्राप्त होती है, समय ही बताएगा।

टेंपल्स ऑफ लिबरलाइजेशन एंड वेलफेयर एलाइड ट्रस्ट (पंजीकृत)

TOLWA

website : www.tolwa.in
Email : tolwadelhi@gmail.com
bathlasanjaybathla@gmail.com

रजिस्टर्ड अंडर सैक्शन 60 विद रजिस्ट्रेशन नंबर (152/02-03-2020), एमएसएमई रजिस्ट्रेशन नंबर उद्यम -डीएल -0026470, नीति आयोग रजिस्ट्रेशन नंबर वीओ/एनजीओ/0303274/25-01-2022 दर्पण

रजिस्टर्ड कार्यालय :- 3, प्रियदर्शिनी अपार्टमेंट, ए -4 पश्चिम विहार, न्यू दिल्ली 110063
कॉरपोरेट कार्यालय :- 529, समयपुर, मैंन बवाना रोड, नियर बैंक ऑफ़ बड़ौदा दिल्ली 110042

दिल्ली मेट्रो: यलो लाइन पर 45 मिनट ठप रही मेट्रो सेवा, यात्रियों को झेलनी पड़ी परेशानी

परिवहन विशेष न्यूज

दिल्ली मेट्रो की येलो लाइन पर आज यात्रियों को काफी दिक्कतों को सामना करना पड़ा। सुबह छह बजे के समय ट्रेन सेवाएं बाधित रहीं। दरअसल यलो लाइन के विश्वविद्यालय स्टेशन पर रखरखाव से संबंधित कार्य करने के कारण ऐसा हुआ। इस दौरान 45 मिनट तक मेट्रो का परिचालन नहीं हुआ। हालांकि DMRC ने पहले ही इसको लेकर अपडेट दिया था।

नई दिल्ली। यलो लाइन के विश्वविद्यालय स्टेशन पर रखरखाव से संबंधित कार्य के कारण शुक्रवार सुबह मेट्रो का परिचालन थोड़ी देर प्रभावित रहा। बाद में सुबह 6:40 बजे से यलो लाइन पर मेट्रो का परिचालन सामान्य रहा लेकिन देर शाम को व्यस्त समय में तकनीकी खराबी के कारण यलो लाइन पर मेट्रो का परिचालन करीब 45 मिनट ठप रहा। इस वजह से यात्रियों को परेशानी का सामना करना पड़ा।

मेट्रो में सफर करने वाले एक यात्री ने बताया कि मिलेनियम सिटी सेंटर गुरुग्राम से समयपुर बादली की तरफ जा रही मेट्रो ट्रेन शाम 7:19 बजे चावाड़ी बाजार स्टेशन पर रुक गई। तकनीकी खराबी के कारण मेट्रो ट्रेन आगे नहीं बढ़ पा रही थी।

देर तक मेट्रो ट्रेन को कर्मचारियों ने ठीक करने का किया प्रयास

बताया जा रहा है कि काफी देर तक मेट्रो ट्रेन को कर्मचारियों ने ठीक करने का प्रयास किया। बाद में काफी देर तक मेट्रो ट्रेन खड़ी रहने के बाद भी जब समस्या का निदान नहीं हुआ तो ट्रेन खाली करा ली गई। सभी यात्री स्टेशन पर उतार लिए गए। इसके अलावा स्टेशन के गेट भी बंद कर दिए गए थे।

ताकि स्टेशन पर यात्रियों की ज्यादा भीड़ न बढ़ने पाए। स्टेशन पर मेट्रो ट्रेन खड़ी होने के कारण चावड़ी बाजार से पिछले स्टेशनों पर भी मेट्रो ट्रेनें खड़ी हो गई थी। काफी देर के बाद दिल्ली मेट्रो रेल निगम (डीएमआरसी) ने इंटरनेट मीडिया पर पोस्ट कर राजीव चौक से कश्मीरी गेट के बीच मेट्रो का परिचालन प्रभावित होने की सूचना दी।

रात में 8 बजकर 5 मिनट पर यलो लाइन पर मेट्रो का हुआ परिचालन

बाद में रात 8:05 बजे यलो लाइन पर मेट्रो (Yellow line Metro) का परिचालन शुरू हुआ। तब जाकर यात्रियों ने राहत की सांस ली। डीएमआरसी ने तकनीकी खराबी का कारण स्पष्ट नहीं किया है।

बता दें कि दिल्ली मेट्रो ने गुरुवार को ही इसको लेकर जानकारी दी थी। DMRC ने बताया अपने प्रेस रिलीज में बताया था कि येलो लाइन पर यात्रा करने वाले यात्रियों को 11 अक्टूबर को थोड़े समय के लिए परेशानी झेलनी पड़ेगी। यात्रियों को सूचित करते हुए मेट्रो ने कहा था कि येलो लाइन पर सुबह के समय आधा घंटे के लिए ट्रेन सेवाएं प्रभावित रहेंगी।

दिल्ली मेट्रो के मुताबिक येलो लाइन (समयपुर बादली-मिलेनियम सिटी सेंटर गुरुग्राम) पर विश्वविद्यालय मेट्रो स्टेशन पर नियोजित रखरखाव गतिविधियों के हिस्से के रूप में लाइन पर ट्रेन सेवाओं को शुक्रवार (11 अक्टूबर 2024) की सुबह के समय में इसका संचालन किया जाएगा।

तमिलनाडु में ट्रेन हादसा, बागमती एक्सप्रेस मालगाड़ी से टकराई; मैसूर से दरभंगा जा रही थी गाड़ी....

नई दिल्ली। मैसूर से दरभंगा जा रही बागमती एक्सप्रेस (12578) तमिलनाडु के कावरापेट्टई स्टेशन के पास मालगाड़ी से टकरा गई। इस हादसे में कई लोगों के घायल होने की आशंका है।

इन ट्रेनों के रूट किए गए परिवर्तित

12621 चेन्नई नई दिल्ली एक्सप्रेस
13352 एलेप्पी धनबाद एक्सप्रेस 18190 एर्नाकुलम टाटा एक्सप्रेस
12664 तिरुचिरापल्ली हावड़ा एक्सप्रेस
07696 रामागुंडम सिकंदराबाद स्पेशल
06063 कोयंबटूर धनबाद एक्सप्रेस स्पेशल गाड़ी
13351 धनबाद अलप्पुषा. एक्सप्रेस
02122 जबलपुर मदुरई एक्सप्रेस

सीपीआरओ दक्षिण पश्चिम रेलवे ने बताया कि ट्रेन संख्या 12578 मैसूर-दरभंगा एक्सप्रेस

चेन्नई डिवीजन के पोन्नेरी-कवरप्पेट्टई रेलवे स्टेशनों (चेन्नई से 46 किमी) के बीच चेन्नई-गुडूर सेक्शन में करीब 8.30 बजे कवरप्पेट्टई रेलवे स्टेशन पर पीछे से मालगाड़ी से टकरा गई। कुल 12-13 डिब्बे पटरी से उतर गए हैं। अभी तक किसी के हताहत होने की खबर नहीं है। सभी घायल यात्रियों को आगे के इलाज के लिए नजदीकी अस्पतालों में ले जाया गया है। दोनों दिशाओं में ट्रेनों की आवाजाही बंद है।

जानकारी के मुताबिक मैसूर-दरभंगा एक्सप्रेस चेन्नई डिवीजन के कवरापेट्टई रेलवे स्टेशन के पास दुर्घटनाग्रस्त हुई है, ट्रेन के इंजन से 6 डिब्बे पटरी से उतर गए, कोई हताहत नहीं, कुछ लोग घायल हुए हैं। वहीं इस हादसे के बाद चेन्नई सेंट्रल से मेडिकल रिलीफ वैन और बचाव दल को रवाना किया गया। जीएम साउथर्न रेलवे डीआरएम चेन्नई डिवीजन और वरिष्ठ अधिकारी घटनास्थल पर जा रहे हैं।

चेन्नई डिवीजन में हेल्पलाइन नंबर

04425354151
04424354995

रेलवे पुलिस के अनुसार टक्कर की वजह से इंजन के बगल में खड़ी पार्सल वैन में आग लग गई, जिसे फायर ब्रिगेड ने बुझा दिया। फिलहाल तमिलनाडु पुलिस और एबुंलेंस की कई गाड़ियां मौके पर पहुंच गई हैं।

हादसे के बाद पटरी से उतरे ट्रेन के कई कोच

रेलवे पुलिस के मुताबिक इस हादसे के बाद बागमती एक्सप्रेस के कम से कम दो कोच पटरी से उतर गए हैं, फिलहाल मौके पर राहत और बचाव कार्य जारी है। जानकारी के मुताबिक गार्ड और ड्राइवर सहित सभी यात्री सुरक्षित हैं।

ट्रैफिक रेड लाइट पर किन-किन वजहों से लगता है जुर्माना, जान लेंगे तो आपको नहीं होगी दिक्कत

भारतीय मोटर व्हीकल एक्ट के मुताबिक ट्रैफिक रेड लाइट का पालन हर उस व्यक्ति को करना चाहिए जो वाहन चलाते हैं। इसका पालन नहीं करने पर आपका चालान तो कटेगा ही कई मामलों में यातायात पुलिस आपका ड्राइविंग लाइसेंस भी जब्त हो सकता है। इतना ही नहीं ट्रैफिक रेड लाइट तोड़कर निकलने पर दुर्घटना भी हो सकती है।

नई दिल्ली। जब आप शहरी इलाकों में वाहन चला रहे होते हैं तो आपको जगह-जगह पर ट्रैफिक सिग्नल्स और रेड लाइट दिखाई देती है। यहां पर रुकना जरूरी होता है और जो लोग इस नियम का पालन नहीं करते हैं और रेड लाइट क्रॉस करने पर चालान कट जाता है। वहीं, बहुत से लोग सोचते हैं कि रेड लाइट की जरूरत ही क्यों है तो आपको बता दें कि रेड लाइट केवल एक कलर नहीं हैं, बल्कि यह एक संकेत और आदेश के साथ काफी जरूरी नियम भी है। इस नियम का पालन करना सभी वाहन चलाने वालों के लिए जरूरी भी है।

क्यों जरूरी है ट्रैफिक रेड लाइट

ट्रैफिक रेड लाइट का मतलब होता है कि आगे खतरा है आपका रुकना जरूरी है। बहुत बार कई लोग इस नियम का पालन नहीं करते हैं और रेड लाइट को तोड़ते हुए आगे बढ़ जाते हैं। जिसकी वजह से उन्हें जुर्माने के साथ ही कई तरह के नुकसान का भी सामना करना पड़ता है। अगर आप इसे जंप करते हैं तो आप न केवल अपनी जान जोखिम में डालते हैं, बल्कि रोड पर चल रहे लोगों की जान भी खतरे में डालते हैं। आपकी एक पल की लापरवाही एक बड़े हादसे में तब्दील हो सकती है।

शहरों में यातायात व्यवस्था रहती है सही

ट्रैफिक रेड लाइट भारत में खास तौर पर शहरी यातायात व्यवस्था सही रखने के लिए इस्तेमाल की जाती है। यह ट्रैफिक कंट्रोल करने और सड़कों पर जान को कम करने में मदद करता है। जब सभी लोग रेड लाइट के नियम का पालन करते हैं तो ट्रैफिक सही से चलता है, लेकिन जब लाल बत्ती जंप करते हैं तो यह ट्रैफिक सिस्टम पर असर पड़ता है जिसकी वजह से जाम लग जाता है।

रेड लाइट जंप करना कानूनी अपराध

ट्रैफिक रेड लाइट जंपर करना भारत में एक कानूनी अपराध है। यातायात नियमों के अनुसार, लाल बत्ती पर रुकना जरूरी है। अगर आप रेड लाइट जंप करते हैं तो आपको जुर्माना भरना पड़ सकता है। इतना ही आपका ड्राइविंग लाइसेंस भी जब्त हो सकता है। रेड लाइट पर जुर्माना इसलिए लगाया जाता है, क्योंकि यह सुरक्षा, ट्रैफिक व्यवस्था और कानून का उल्लंघन होता है।

रेड लाइट इन बातों का रखें ध्यान

अगर आप सड़क पर किसी भी तरह का वाहन लेकर निकलते हैं तो लाल बत्ती पर हमेशा रूकें। रेड लाइट जंप करने की गलती बिल्कुल भी ना करें और अन्य वाहनों से सुरक्षित दूरी बनाकर गाड़ी चलाएं। इसके साथ ही किसी तरह के जानमाल के नुकसान से बचने के लिए ट्रैफिक नियमों का पालन करें।

शुरुआती डेटिंग में भावनाओं और ज़रूरतों को साझा करना क्यों मुश्किल है?

डेटिंग के दौरान अपनी भावनाओं और ज़रूरतों को साझा करना बहुत डरावना हो सकता है। अपनी ज़रूरतों और भावनाओं को साझा करके हम नकारे जाने या निराश होने के प्रति कमज़ोर हो जाते हैं, लेकिन दूसरा विकल्प क्या है? अगर हम अपनी ज़रूरतों को साझा नहीं करते हैं तो वे कैसे जान सकते हैं कि हमारी ज़रूरतें क्या हैं?

भावनाओं और ज़रूरतों को व्यक्त करना हर किसी के बस की बात नहीं होती। ज़्यादातर लोगों को खुलकर बात करने में परेशानी होती है। उनके लिए अपने साथी को अपनी ज़रूरतें और भावनाएँ बताना मुश्किल होता है। लेकिन क्यों? इसके कई कारण हैं।

थेरेपिस्ट ल्यूसिल शेकलटन ने कुछ कारण बताए कि डेटिंग के दौरान लोग अपनी भावनाओं और ज़रूरतों को साझा करने में क्यों संघर्ष करते हैं। उन्होंने अपने पोस्ट में लिखा, 'डेटिंग के दौरान अपनी भावनाओं और ज़रूरतों को साझा करना बहुत डरावना हो सकता है। अपनी ज़रूरतों और भावनाओं को साझा करके हम नकारे जाने या निराश होने के प्रति कमज़ोर हो जाते हैं... लेकिन दूसरा विकल्प क्या है? अगर हम अपनी ज़रूरतों को साझा नहीं करते हैं तो वे कैसे जान सकते हैं कि हमारी ज़रूरतें क्या हैं? अगर हम अपनी भावनाओं को साझा नहीं करते हैं तो वे कैसे जान पाएँगे कि हम कैसा महसूस करते हैं?'

उन्होंने आगे लिखा, 'अपनी भावनाओं और ज़रूरतों को साझा करना डरावना है, लेकिन यह मज़बूत रिश्ते की नींव बनाने का एक बड़ा हिस्सा है। हमें वास्तव में यह देखने की ज़रूरत है कि क्या वे हमारी भावनाओं को समझ सकते हैं और हमारी ज़रूरतों पर प्रतिक्रिया दे सकते हैं ताकि यह पता लगाया जा सके कि कोई हमारे लिए एक अच्छा मैच है या नहीं।'

थेरेपिस्ट ने बताया, 'जब आप साझा करते हैं कि आप कैसा महसूस करते हैं और आपको क्या चाहिए और आपका साथी आपके लिए जगह बनाने में सक्षम होता है, तो यह विश्वास बनाने में मदद करता है। जब वे आपकी भावनाओं और ज़रूरतों को एक सहायक तरीके से प्रतिक्रिया देने में सक्षम होते हैं और फिर उनका ध्यान रखते हैं, तो यह सुरक्षा, भावनात्मक सुरक्षा की भावना पैदा करता है और संबंध को गहरा करता है। निश्चित रूप से यह डरावना है, लेकिन अधिक खुलने से शानदार पुरस्कार मिल सकते हैं।'

डेटिंग के दौरान हम अपनी भावनाओं और ज़रूरतों को साझा करने में संघर्ष क्यों करते हैं?

हमें कमज़ोर होने का डर होता है- भावनाओं के बारे में खुलकर बात करने से हम खुद को असुरक्षित और कमज़ोर महसूस कर सकते हैं। डेटिंग के शुरुआती दौर में ऐसा महसूस करना आम है, इसलिए खुद को थोड़ा दीजिये।

हमें अस्वीकार किए जाने का डर होता है- हमें डर हो सकता है कि अपनी भावनाओं को व्यक्त करने से हमें अस्वीकार कर दिया जाएगा या वे हमारी रुचि खो देंगे।

हम उनकी भावनाओं के बारे में अनिश्चित हो सकते हैं- अगर हम इस बारे में अनिश्चित हैं कि दूसरा व्यक्ति कैसा महसूस करता है, तो इससे अपनी भावनाओं को साझा करने में झिझक हो सकती है।

हमें नहीं पता कि इसे कैसे कहें- कभी-कभी हमें यह नहीं पता होता कि हम जो महसूस करते हैं उसे कैसे व्यक्त करें।

हमें अतीत में बुरे अनुभव हुए हैं- यह हमें अपनी भावनाओं और ज़रूरतों के बारे में खुलकर बात करने के बारे में ज़्यादा सतर्क बना सकता है।

आत्म-सुरक्षा- कभी-कभी हम यह नहीं बताते कि हम कैसा महसूस करते हैं और हमें खुद को संभावित चोट या निराशा से बचाने के लिए क्या चाहिए, अगर हमारी भावनाओं का जवाब नहीं दिया जाता है या हमारी ज़रूरतें पूरी नहीं होती हैं।

हम खुद पर संदेह करते हैं- कभी-कभी हम अपनी ज़रूरतों या भावनाओं पर संदेह करते हैं और डरते हैं कि खुद को व्यक्त करना दूसरे व्यक्ति के लिए 'बहुत ज़्यादा' होगा।

अगर आप अभी इस समस्या से जूझ रहे हैं, तो खुद से ये सवाल पूछें

पहला सवाल- अगर मैं अपनी भावनाओं या ज़रूरतों को दूसरों के साथ साझा करूँ, तो मुझे क्या डर है?

दूसरा सवाल- क्या मेरे पास कोई ऐसा पिछला अनुभव है, जो मेरी मौजूदा स्थिति को प्रभावित कर रहा है?

तीसरा सवाल- क्या मैं अपनी ज़रूरतों या भावनाओं का आकलन कर रहा हूँ या ज़रूरतमंद दिखने के बारे में चिंतित हूँ?

चौथा सवाल- मुझे लगता है कि दूसरा व्यक्ति किस तरह से प्रतिक्रिया देगा? क्या यह इस बात पर आधारित है कि मैंने अब तक उन्हें कैसे अनुभव किया है या डर पर?

पांचवा सवाल- क्या मैं अपनी भावनाओं और अपनी सुरक्षा के लिए किसी तरह की ज़रूरतों को साझा करने से होने वाली असुविधा से बच रहा हूँ? अगर हाँ, तो किससे?

एक्सपर्ट से जानें किस समय वॉक करना सही होता है सुबह या शाम? तनाव होता है दूर

एक कहावत है कि हेल्थ इज वेल्थ यानी स्वास्थ्य ही धन है। अगर आपकी सेहत बढ़िया होगी तो सब बेहतर होगा। हर किसी को अपने शरीर को हेल्दी और बीमारियों से बचने के लिए 45 मिनट्स जरुर निकालने चाहिए। अगर आप वॉक करते हैं तो आपका शरीर काफी हेल्दी रहता है। चलिए जानते हैं सुबह या शाम की वॉक कौन-सी सबसे ज्यादा हेल्दी है।

आज के समय में बिजी लाइफस्टाइल में खुद के लिए समय निकाल पाना काफी मुश्किल होता है। आलास के चक्कर में एक्सरसाइज न करने से से मोटापा बढ़ने लगता है और कई खतरनाक बीमारियां तक होने लगती है। अगर आपके पास एक्सरसाइज और योग करने का समय नहीं तो सबसे आसान है कि आप वॉक कर सकते हैं। वॉक को सबसे बेस्ट एक्सरसाइज माना गया है लेकिन क्या आपको पता है कि वॉकिंग के लिए बेस्ट टाइम क्या है? सबुह या शाम कब टहलें या किस टाइम तक टहला चाहिए, आइए जानते हैं।

सुबह की वॉक हेल्दी

एक पॉडकास्ट में सेलेब्स फिजियोथेरेपी और स्पोर्ट्स मेडिसन स्पेशलिस्ट डाक्टर अली ईरानी ने बताया है कि शाम की वॉक की तुलना में सुबह वॉक करने वाले ज्यादा हेल्दी होते हैं। यह वीडियो आपको डॉक्टक के इंस्टाग्राम अकाउंट पर मिल जाएगी।

सुबह की वॉक से मेंटल हेल्थ ठीक होती है

उन्होंने इस पॉडकास्ट में आगे बताया है कि सूरज उगने से डेढ़ घंटे पहले जो यूनिवर्स से ओजोन लेयर की एनर्जी शरीर को मिलती है वह फिजिकल से लेकर मेंटल हेल्थ तक के लिए अच्छी होती है। सूरज उगने के डेढ़ घंटे से लेकर सूरज की पहली किरण पड़ने तक का समय एक्सरसाइज के लिए सबसे बेहतरीन होता है।

सुबह की वॉक के फायदे

अगर आप सुबह वॉक करते हैं तो कई फायदे मिलते हैं। इससे हृदय रोग और विशिष्ट तरह कैंसर के जोखिम को कम होता है, इसके साथ ही एनर्जी भरपूर मिलती है, ब्लड प्रेशर कम होता है और मेटाबॉलिज्म हाई होता है जिससे वेट कम होता है।

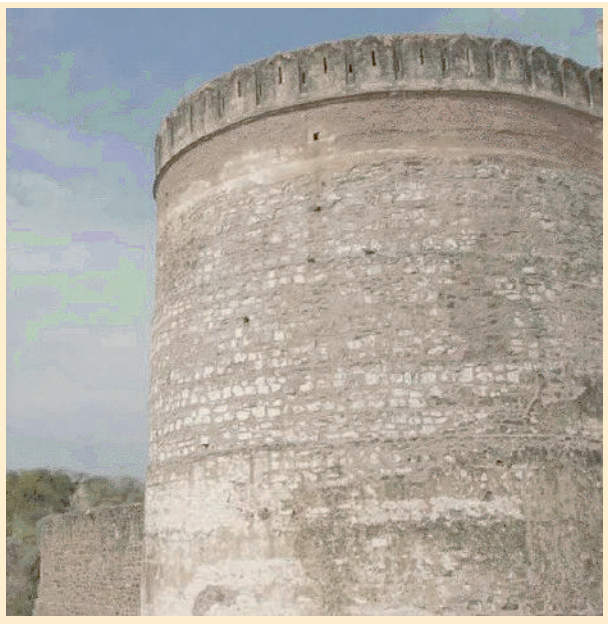

प्राकृतिक सौंदर्य और ऐतिहासिक महत्व के लिए प्रसिद्ध है भरतपुर नगरी

भरतपुर के इन प्रमुख पर्यटन स्थलों के अलावा भी इस नगरी में कई और रोमांचक और सांस्कृतिक स्थल हैं जो आपके पर्यटन अनुभव को और भी समृद्ध बना सकते हैं। इसके अतिरिक्त, भरतपुर की स्थानीय संस्कृति, खासतौर पर उसका रंग-बिरंगी लोक नृत्य और संगीत भी पर्यटकों को आकर्षित करती हैं।

राजस्थान, भारत की धरोहरों और समृद्ध सांस्कृतिक विरासत का अद्वितीय संगम है। इस प्राचीन भूमि का हिस्सा होने के नाते, यहाँ के नगरों ने अपनी अलग पहचान बनाई है। इसमें से एक नगरी है भरतपुर, जो अपने प्राकृतिक सौंदर्य और ऐतिहासिक महत्व के लिए प्रसिद्ध है।

किला भरतपुर: यह किला भरतपुर का प्रमुख आकर्षण है, जिसे 18वीं सदी में महाराजा सूरजमल ने बनवाया था। इसकी विशेषता उसकी अद्वितीय वास्तुकला और समुद्री ढाल है।

केवलादेव नेशनल पार्क: यह पार्क भारतीय जैव विविधता के लिए जाना जाता है और विशेषतः पक्षी प्रेमियों के बीच लोकप्रिय है। यहाँ अगर आप पक्षियों की खोज में निकलें, तो आपको बहुत सी प्रजातियों का अनुभव मिलेगा।

लोहगढ़ फोर्ट: यह फोर्ट भी भरतपुर में स्थित है और यह एक अन्य ऐतिहासिक स्थल है जो 18वीं सदी में बनाया गया था। इसकी महत्वपूर्ण विशेषता उसकी सुंदर वास्तुकला और राजपूतानी स्थापत्य शैली में है।

लोहगढ़ वाणी विलास: यह एक अद्वितीय स्मारक है जो विशेषतः शिकारी महाराजों के लिए बनाया गया था। इसकी शैली और साज सज्जा देखने लायक है।

भरतपुर के इन प्रमुख पर्यटन स्थलों के अलावा भी इस नगरी में कई और रोमांचक और सांस्कृतिक स्थल हैं जो आपके पर्यटन अनुभव को और भी समृद्ध बना सकते हैं। इसके अतिरिक्त, भरतपुर की स्थानीय संस्कृति, खासतौर पर उसका रंग-बिरंगी लोक नृत्य और संगीत भी पर्यटकों को आकर्षित करती हैं।

भरतपुर शहर में स्थित महत्वपूर्ण मंदिर

1. बांके बिहारी मंदिर: भरतपुर का बांके बिहारी मंदिर कृष्ण भगवान के प्रमुख मंदिरों में माना जाता है। इस मंदिर में भगवान बांके बिहारी की मूर्ति स्थापित है और यहाँ के भक्त निरंतर उनकी पूजा-अर्चना में जुटे रहते हैं।

2. लक्ष्मी नारायण मंदिर: यह मंदिर भरतपुर के प्रमुख धार्मिक स्थलों में से एक है, जो लक्ष्मी और नारायण को समर्पित है। इसकी महत्वपूर्ण विशेषता उसकी राजपूतानी वास्तुकला और संस्कृति है।

3. गोलोकधाम मंदिर: यह मंदिर भरतपुर का एक अन्य महत्वपूर्ण धार्मिक स्थल है, जो कृष्ण भगवान को समर्पित है। यहाँ भक्त ध्यान और ध्यान में जुटे रहते हैं। इस मंदिर की स्थापत्य शैली उसकी विशेषता है।

4. भवानी नाथ मंदिर: भरतपुर में स्थित इस मंदिर में माँ भवानी की मूर्ति स्थापित है, जिसे स्थानीय लोग विशेष श्रद्धा और भक्ति से पूजते हैं।

5. श्री मुक्तेश्वर महादेव मंदिर: यह मंदिर भरतपुर का एक अन्य प्रसिद्ध महादेव मंदिर है, जिसे शिवजी को समर्पित किया गया है। इस मंदिर में स्थापित शिवलिंग की भक्त निरंतर अर्चना करते हैं और इसकी शांति पूजा महादेव भक्तों को आकर्षित करती है।

भारत का UPI पर दुनियाभर में मचाएगा धमाल, इन 4 आसियान देशों के लोग कर सकेंगे पेमेंट, जानें पूरी जानकारी

केंद्रीय बैंक आरबीआई प्रोजेक्ट नेक्सस में शामिल हो गया है। ये यूपीआई जैसे डोमेस्टिक फास्ट पेमेंट सिस्टम को देश से बाहर बैठे लोगों के बीच पैसों को भुगतान करने में सक्षम बनाएगा। अगले साल से फिलीपींस, मलेशिया और थाईलैंड के फास्ट पेमेंट सिस्टम को यूपीआई से जोड़ दिया जाएगा।

देश का केंद्रीय बैंक आरबीआई प्रोजेक्ट नेक्सस में शामिल हो गया है। ये यूपीआई जैसे डोमेस्टिक फास्ट पेमेंट सिस्टम को देश से बाहर बैठे लोगों के बीच पैसों को भुगतान करने में सक्षम बनाएगा। अगले साल से फिलीपींस, मलेशिया और थाईलैंड के फास्ट पेमेंट सिस्टम को यूपीआई से जोड़ दिया जाएगा। जिससे इन देशों के नामगरिक यूपीआई से पैसों का डिजिटल ट्रांसजैक्शन करने में सक्षम होंगे। इंडोनेशिया भी भविष्य में यूपीआई पेमेंट सिस्टम से जुड़ सकता है।

बता दें कि, रविवार को आरबीआई ने इस समझौते पर साइन किए। साथ ही इस दौरान आरबीआई गर्वनर शक्तिकांत दास ने कहा कि, मेरे विचार में प्रोजेक्ट नेक्सस का सबसे बड़ा लाभ ये होगा कि इससे सीमा पार भुगतान बहुत तेज और कम खर्चीला हो जाएगा। ये कम लागत पर सीमा पार डिजिटल ट्रांजैक्शन को तेज करने के लिए देशों के बीच ज्यादा अंतर्राष्ट्रीय सहयोग को बढ़ा देगा।

आरबीआई यूपीआई और कई देशों के एफपीएस के माध्यम से सीमा पार खुदरा भुगतान को सक्षम करने के लिए प्रोजेक्ट नेक्सस में शामिल हो गया है। गर्वनर शाक्तिकांत दास ने वर्ल्ड बैंक के आकलन के अनुरूप लागत में कमी की उम्मीद जताई है। इस पहल में BISIH शामिल है और इसका उद्देश्य भुगतान दक्षता और गति को बढ़ाने के लिए बहुपक्षीय सहयोग करना है। जिससे व्यक्ति से व्यक्ति और व्यक्ति से व्यापारी लेनदेन को लाभ होगा।

आरबीआई के गर्वनर शक्तिकांत दास ने प्रोजेक्ट नेक्सस के लाभों पर जोर दिया, जिसका उद्देश्य मलेशिया, फिलीपींस, सिंगापुर और थाईलैंड जैसे देशों के फास्ट पेमेंट सिस्टम के साथ यूपीआई को जोड़ना है, जिसमें बाद में इंडोनेशिया भी शामिल होगा, इस पहल का उद्देश्य सीमा पार भुगतान दक्षता में सुधार करना है, जिससे तेज और ज्यादा लागत प्रभावी ट्रांजैक्शन के लिए अंतर्राष्ट्रीय सहयोग को बढ़ावा मिलेगा।

ओडिशा की इन शानदार और बेहतरीन जगहों को करें एक्सप्लोर, यादगार बनेगी

घूमने के शौकीन लोग देश का हर एक कोना घूमना चाहते हैं। घूमने के लिहाज से ओडिशा देश का एक बेहतरीन राज्य है। इसके साथ ही ओडिशा एक लोकप्रिय पर्यटन स्थल है। इस राज्य को एक्सप्लोर करने के लिए हर रोज हजारों की संख्या में पर्यटक यहां पहुंचते हैं।

घूमने के शौकीन लोग देश का हर एक कोना घूमना चाहते हैं। घूमने के लिहाज से ओडिशा देश का एक बेहतरीन राज्य है। इसके साथ ही ओडिशा एक लोकप्रिय पर्यटन स्थल है। इस राज्य को एक्सप्लोर करने के लिए हर रोज हजारों की संख्या में पर्यटक यहां पहुंचते हैं। वहीं ओडिशा की जगन्नाथ रथ यात्रा पूरे देश में ही नहीं बल्कि विश्व में फेमस है। इस साल 07 जुलाई 2024 को पुरी से जगन्नाथ रथ यात्रा निकलेगी। वहीं आपको ओडिशा घूमने के दौरान फेमस सूर्य मंदिर एक्सप्लोर करना चाहिए।

ऐसे में अगर आप भी जगन्नाथ रथ यात्रा में शामिल होने का प्लान बना रहे हैं, तो आपको फेमस सूर्य मंदिर के अलावा अन्य कई जगहों को भी एक्सप्लोर कर सकते हैं। ऐसे में आज इस आर्टिकल के जरिए हम आपको कोणार्क सूर्य मंदिर के आसपास मौजूद कुछ शानदार और फेमस जगहों के बारे में बताने जा रहे हैं। इन शानदार जगहों को आप अपने पार्टनर, परिवार या दोस्तों के साथ एक्सप्लोर कर सकते हैं।

चंद्रभागा बीच

अगर आप भी कोणार्क सूर्य मंदिर के आसपास की किसी शानदार जगह को एक्सप्लोर करना चाहते हैं, तो आपको चंद्रभागा बीच घूमने जा सकते हैं। बता दें कि यह बीच काफी फेमस है और यहां पर आपको देशी और विदेशी पर्यटक घूमते दिख जाएंगे। यह ओडिशा के खूबसूरत बीचेज में से एक है। इस बीच से आपको सनसेट और सनराइज का नजारा देखना चाहिए। आप यहां पर बीच के किनारे बैठकर ठंडी हवाओं का लुत्फ उठा सकते हैं। आप अपने पार्टनर के साथ यहां पर सुकून के कुछ पल बिता सकते हैं।

कुरुमा गांव

वहीं कोणार्क मंदिर से करीब8 किमी की दूरी पर दक्षिण-पूर्व में स्थित कुरुमा एक खूबसूरत और मनमोहक गांव है। बताया जाता है कि यह गांव इतना अधिक खूबसूरत है कि यहां हर कोई आना चाहता है। यह गांव अपनी खूबसूरती और मनमोहन नजारों के अलावा बौद्ध स्थल के लिए भी फेमस है। कुरुमा गांव में खूबसूरत बौद्ध स्तूप है, जिसे आपको जरूर एक्सप्लोर करना चाहिए। यहां आप आपको चाइनीज सैलानी भी घूमते दिख जाएंगे। इस गांव से कुछ ही दूरी पर टर्टल बीच है। जहां पर आप वाटर एक्टिविटी भी कर सकते हैं।

पुरी-कोणार्क मरीन ड्राइव

पुरी-कोणार्क मरीन ड्राइव बेहद खूबसूरत और हसीन है। यहां पर समुद्र के किनारे आप सुबह-शाम को ड्राइव का लुत्फ उठाते हुए हसीन नजारों को देख सकते हैं। इसके अलावा आप पुरी-कोणार्क मरीन ड्राइव के साथ इको रिट्रीट कोणार्क, कोणार्क बीच, मरीन ड्राइव बीच और मरीन ड्राइव रोड साइड व्यू पॉइंट जैसी शानदार जगहों पर घूम सकते हैं।

उदयगिरि और खंडगिरि की गुफाएं

कोणार्क सूर्य मंदिर से लगभग 65 किमी की दूरी पर उदयगिरि और खंडगिरि की गुफाएं काफी फेमस हैं। यह गुफाएं भारत की सबसे प्राचीन गुफाओं में से एक है। इन गुफाओं को एक्सप्लोर करने के लिए हर रोज हजारों लोग आते हैं। उदयगिरि और खंडगिरि गुफाओं के बारे में कहा जाता है कि यह गुफाएं जैन समुदाय द्वारा बनाई गई हैं। उदयगिरि में 18 गुफा और खंडगिरि में 15 गुफाएं मौजूद हैं। इन गुफाओं में कई प्राचीन मूर्तियां देखने को मिलेंगी।

एएसआई म्यूजियम

बहुत सारे लोग एएसआई म्यूजियम को कोणार्क संग्रहालय के नाम से भी जानते हैं। बता दें कि इतिहास प्रेमियों के अलावा कला प्रेमियों के लिए यह म्यूजियम एक शानदार पर्यटन स्थल माना जाता है। बताया जाता है कि साल 1968 में कोणार्क म्यूजियम की शुरुआत हुई थी। भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण द्वारा इसका रखरखाव किया जाता है। एएसआई म्यूजियम में आप 60 से भी अधिक कलाकृतियों को करीब से देख सकते हैं।

दशहराः प्रधानमंत्री मोदी से लेकर करीना कपूर तक...लालकिले के मंच पर होगा सभी का दीदार

दिल्ली सहित देशभर में धूमधाम से विजयदशमी का त्योहार मनाया जाएगा। श्री धार्मिक लीला कमेटी ने भी प्रोग्राम को आयोजित किया है। राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मु और प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी को भी कार्यक्रम में शामिल होने के लिए न्योता मिला है। प्रधानमंत्री कार्यक्रम में राम-रावण युद्ध देखेंगे। पीएम और राष्ट्रपति के आगमन को लेकर सुरक्षा सख्त रहेगी। पढ़ें पूरी खबर।

नई दिल्ली। राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मु और प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी (PM Modi) इस बार साथ साथ दशहरा पर्व पर लाल किला में मंचित हो रही श्री धार्मिक लीला समिति पहुंचेंगे। श्री धार्मिक लीला कमेटी (Shri Dharmik Leela Committee) ने विजय दशमी पर्व देखने के लिए राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मु और प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी को न्यौता दिया था।

कमेटी के महासचिव धीरजधर गुप्ता व सचिव प्रदीप शरण ने बताया कि राष्ट्रपति और प्रधानमंत्री ने उनका न्यौता स्वीकार कर लिया है। उन्होंने विजय दशमी के दिन लालकिला मैदान स्थित माधवदास पार्क में उनके पंडाल में आने की स्वीकृति दे दी है।

राष्ट्रपति और पीएम के आगमन को लेकर कमेटी ने तैयारी की शुरू

उनके आगमन के मद्देनजर कमेटी ने अपने पंडाल में तैयारी शुरू कर दी है। कमेटी के प्रवक्ता रवि जैन ने बताया कि विजय दशमी के दिन देश के कई अन्य बड़े नेता भी उनके यहां पर राम-रावण युद्ध देखने के लिए आएंगे।

लवकुश रामलीला कमेटी में भी आ चुके हैं प्रधानमंत्री

इसके अलावा कई देशों के एम्बेसडर भी उनके यहां रावण, कुंभकरण और मेघनाथ के पुतलों के दहन कार्यक्रम में शामिल होंगे। प्रधानमंत्री दूसरी बार इस लीला में दशहरा अवसर पर पधारेंगे। जबकि एक बार लवकुश रामलीला में भी आ चुके हैं।

इसी तरह, लवकुश रामलीला कमेटी (Lavkush Ramlila Committee) ने इस बार दशहरा के अवसर पर रावण दहन के लिए फिल्मी दुनिया के कलाकारों को आमंत्रित किया है। कमेटी के अध्यक्ष अर्जुन कुमार ने बताया कि बुराई पर सच्चाई की जीत के लिए फिल्मी दुनिया के मशहूर अभिनेता अजय देवगन (Ajay Devgn), जाने-माने फिल्म डायरेक्टर रोहित शेट्टी व बॉलीवुड हीरोइन करीना कपूर ने अपनी सहमति प्रदान कर दी है।

दिल्ली के द्वारका में सबसे बड़ा रावण का पुतला

नवरात्र की शुरुआत होने के साथ ही अब लोग रावण दहन देखने के लिए बेहद उत्साहित नजर आ रहे हैं। दिल्ली सहित देशभर में बहुत ही धूमधाम से रामलीला का मंचन किया जा रहा है।

वहीं इस बार राजधानी के द्वारका के रामलीला ग्राउंड में बनाया गया विशाल रावण का पुतला। जिसकी लंबाई को लेकर दावा किया जा रहा है कि यह दिल्ली ही नहीं बल्कि दुनिया का सबसे बड़ा रावण का पुतला है।

इसकी लंबाई की बात करें तो 211 फीट है। बता दें कि यह रावण का पुतला वाटर प्रूफ है क्योंकि इसे मखमल के कपड़े से निर्माण किया गया है। इसको बनाने में कागज का तनिक भी उपयोग नहीं हुआ है।

रामायण का प्रत्येक भाग प्रेरणादायकः-अलका गुर्जर

परिवहन विशेष न्यूज

नई दिल्ली। आदर्श रामलीला कमेटी अशोक विहार फेस 2 में कुंभकरण-मेघनाथ व अहिरावण वध कि लीला का मंचन निपुण कलाकारों द्वारा प्रस्तुत किया गया। स्पेशल इफेक्ट, एल ई डी, कंप्यूटरराइड यंत्र व लेजर लाइट के उपयोग से युद्ध कौशल आकर्षण का केंद्र बना। भूतों और राक्षसों का उन्माद डरावना व अद्भुत कौशल से परिपूर्ण था। काली माता कि मंच पर उपस्थिति देख दर्शक रोमांचित हो गए उन्होंने 11फुट लंबा और 11किलो वजन का मुकुट पहन रखा था। युद्ध के दौरान तलवार से तलवार और तीर से तीर टकराने पर चिंगारी निकलती हुई दिखाई दी।

दैनिक रामलीला से पूर्व हरिहर अपार्टमेंट के बाल कलाकारों के द्वारा संपूर्ण रामलीला का मंचन किया गया। पारिवारिक बाल कलाकारों का अभिनय देख दर्शक मंत्र मुग्ध हो गए।

रतन टाटा को रामलीला मंच से विनम्र श्रद्धांजलि दी गई। उनके सादगी और सेवा भाव को याद किया गया।

आज की लीला का उद्घाटन विश्व हिंदू परिषद के अंतरराष्ट्रीय अध्यक्ष आलोक कुमार, भारतीय जनता पार्टी की राष्ट्रीय मंत्री अलका गुर्जर, सांसद बांसुरी स्वराज व सतीश गर्ग कोषाध्यक्ष भाजपा दिल्ली प्रदेश के द्वारा किया गया। इस अवसर पर आलोक कुमार ने कहा कि सेवा को जीवन का मूल मंत्र बनाएं। इसके जीवंत प्रेरणा हमें श्रेष्ठतम सेवा व्रती स्वर्गीय मांगेराम गर्ग से मिलती है जिन्होंने अनेकों संस्थाओं का सृजन समाज सेवा के लिए किया उनमें से आदर्श रामलीला कमेटी भी एक है जो कि रामलीला के साथ सेवा का प्रकल्प भी चलाती है। अलका गुर्जर ने कहा कि रामायण का प्रत्येक भाग प्रेरणादायक है बांसुरी स्वराज ने कहा कि श्री राम का चरित्र, कर्तव्यनिष्ठ, कर्म प्रधान, आदर्शों एवं मर्यादाओं से युक्त अति विनम्र व प्रेम प्रधान है हमें उनके जीवन से प्रेरणा लेकर मर्यादित जीवन जीना चाहिए। अध्यक्ष अशोक गर्ग व महामंत्री अनिल यादव ने जल संरक्षण व डेंगू रोकथाम के लिए दर्शकों को जागरूक किया। कार्यक्रम में देवराज (पूर्व पार्षद) स्वागत अध्यक्ष, नितिन बत्रा लीला निदेशक, प्रदीप गोयल कोषाध्यक्ष, चंदन शर्मा मेला अध्यक्ष, संदीप गुप्ता व्यवस्था अध्यक्ष, राकेश गुप्ता, राहुल गुप्ता, मनोज गुप्ता, बिट्टू हार्मिलापी, सुरेश जैन, दर्शन लाल बजाज, राजेंद्र खंडेलवाल, उषा गोयल, रजनी गुप्ता, आशीष मित्तल, उपस्थित रहे।

आम आदमी पार्टी को 10 साल बाद दिल्ली के गांवों में विकास करने की सूझी- देवेन्द्र यादव

सुषमा रानी

नई दिल्ली, दिल्ली प्रदेश कांग्रेस कमेटी के अध्यक्ष देवेन्द्र यादव ने कहा कि चौतरफा फेल होती आम आदमी पार्टी जनता को रिझाने के लिए अपने अंतिम चरण में जीवंत होने की हर संभव कोशिश कर रही है। जहां इनके विधायक वार्षिक 10 करोड़ को खर्च करने में असमर्थ रहे, उस पर विधायक फंड को 15 करोड़ वार्षिक करना सीधा-सीधा भारी भ्रष्टाचार की ओर इशारा करता है। 31 अक्टूबर तक दिल्ली की सभी सड़के बनाने का दावा हाथ से फिसलता देख आतिशी ने यह फैसला लिया। कमीशन और भ्रष्टाचार को अंजाम देने की दृष्टि से विधायक नीधि बढ़ाने का निर्णय लिया है। देवेन्द्र यादव ने कहा कि चुनाव हारने का डर आम आदमी पार्टी को सता रहा है इसलिए आतिशी बिना सोचे समझे जल्दबाज़ी में फ़ैसले ले रही हैं।

उन्होंने कहा कि जहां 2020 से अभी तक विधायकां को 15 करोड़ का फंड मिला है, जबकि अभी तक 40 करोड़ रुपये प्रति विधायक को मिलना चाहिए था। उन्होंने कहा कि सत्ता आखिरी समय के एक-दो महीने पहले जनता को गुमराह करने के लिए विधायक नीधि में बढ़ोत्तरी, लास्ट कनेक्टिविटी के लिए मौहल्ला बसें और गांवो के विकास के लिए नई योजनाओं को लाने के लिए मुख्यमंत्री आतिशी अंजाम दे रही है। उन्होंने कहा कि जब साढे चार वर्षों में आम आदमी पार्टी के विधायक 15 करोड़ खर्च नही कर पाए तो 3-4 महीनें में बचे हुए 40 करोड़ रुपये खर्च किस तरह करेंगे, क्या विधानसभा चुनाव लड़ने के लिए धन एकत्रित करने के लिए पूरा फंड कागजों में खर्च होने वाला है।

यादव ने कहा कि भ्रष्टाचार, दिल्ली की जनता तक पहुँचने में फेल, अरविन्द केजरीवाल, मनीष सिसोदिया, सत्येन्द्र जैन और संजय सिंह के शराब घोटाले के आरोप में जेल और अब मुख्यमंत्री निवास का मामला आम आदमी पार्टी के गले की फांस बन चुका है, जिससे बाहर निकलने के लिए मुख्यमंत्री आतिशी जनता को भ्रमित करने के लिए नए-नए हथकंडे अपना रही है। उन्होंने कहा कि पिछले 3 महीनों से मोहल्ला बसों का ढ़ढिोरा पीटने बाद अभी तक यह सेवा शुरु नही हो सकी है और विधायक निधी को खर्च नही करने के कारण दिल्ली का विकास ही रुका पड़ा है। जनता कैसे आम आदमी पार्टी पर विश्वास करेगी?

उन्होने कहा कि दिल्ली के गाँवों के लिए दिल्ली ग्राम विकास बोर्ड द्वारा शुरू की गई योजनाएं भी जुमला है क्योंकि 10 साल तक दिल्ली के गाँवो के विकास के काम के लिए क्या आम आदमी पार्टी की सरकार सोई हुई थी, जो चुनाव से पहले, ये योजनाओं की बात लोगों को लुभाने के लिए कर रही है।

यादव ने कहा कि विधायक निधि में बढ़ोतरी करने से पहले पिछले दस सालों में दी गई विधायक निधि का इस्तेमाल कैसे किया गया यह एक जाँच का विषय है, यदि विधायकों ने इस राशि का इस्तेमाल सही तरीक़े से किया होता तो मानसून की बारिश से इतना जल भराव नहीं होता जिसके कारण 40 से ज़्यादा लोगो को अपनी जान नहीं गवानी पड़ी।

आतिशी को मिला केजरीवाल का बंगला, दो दिन पहले ही करवाया गया था खाली

बीते दो दिनों से दिल्ली की राजनीति में मुख्यमंत्री के बंगले को लेकर जंग छिड़ी हुई थी अब लोक निर्माण विभाग के एक कदम से यह पूरा मसला सुलझ गया है। लोक निर्माण विभाग (पीडब्ल्यूडी) ने सभी कागजी कार्रवाई पूरी करने के बाद दिल्ली की मुख्यमंत्री आतिशी को वो बंगला अलॉट कर दिया है जिसमें पूर्व मुख्यमंत्री अरविंद केजरीवाल रहा करते थे।

नई दिल्ली। दिल्ली की मुख्यमंत्री आतिशी के बंगले को लेकर छिड़ी राजनीति पर अब विराम लग सकता है। दरअसल पीडब्ल्यूडी ने जिस बंगले को दो दिन पहले सील कर आतिशी का सामान वापस करवा दिया था, वही बंगला अब उन्हें बकायदा अलॉट कर दिया गया है। पीडब्ल्यूडी ने आतिशी को बंगला अलॉट करने का ऑफर लेटर जारी किया है। इसमें बताया गया है कि दिल्ली की मुख्यमंत्री आतिशी को जनरल पूल 6 फ्लैग स्टाफ रोड बंगला सरकारी आवास के तौर पर अलॉट किया गया है।

बंगला आवंटन की क्या है प्रक्रिया

सरकारी बंगला खाली करने के समय की कार्रवाई अति महत्वपूर्ण मानी जाती है। सीएम आवास की बात करें तो यहां सभी सामान सरकारी होता है, केवल रहने वाले लोगों के उपयोग का निजी सामान ही वे अपने साथ लाते हैं और बंगला खाली करने पर साथ ले जाते हैं। ऐसे में बंगला खाली किए जाने के समय सबसे पहले बंगले में रहने वाली सभी सामान की एक रिपोर्ट बनाई जाती है। उसे संबंधित अधिकारी प्रमाणित करते हैं और एक रिपोर्ट जारी करते हैं कि सभी कुछ सामान मौजूद है। इसी दौरान सरकार का सामान्य प्रशासन विभाग बिजली, पानी आदि के बिलों से संबंधित एक नो ड्यूज प्रमाणपत्र जारी करता है। जिसमें प्रमाणित किया जाता है कि संबंधित व्यक्ति जिस बंगले में रह रहा था, उस पर कोई बकाया नहीं है। बंगला खाली करने के समय रहने वाले संबंधित व्यक्ति जिस विभाग का बंगला है उसे आवास की चाबी सौंप देते हैं। इसके बाद संबंधित विभाग का अभियंता बंगले का निरीक्षण कर बंगला खाली होने की रिपोर्ट जारी करता है। इसके बाद बंगला मांगे जाने पर नए व्यक्ति को आवंटित किया जाता है।

प्वाइंट्स में समझें क्या है विवाद

मुख्यमंत्री आवास को लेकर चल रहे विवाद में उस वक्त ट्विस्ट आ गया, जब बुधवार को पीडब्ल्यूडी ने बंगले को खाली करा अपने कब्जे में ले लिया और सील कर दिया।

सील करने से पहले सीएम आतिशी का जितना भी सामान वहां पहुंचा था उसे वापस करा दिया गया।

वहीं इस मामले में सतर्कता विभाग ने कार्रवाई करते हुए मुख्यमंत्री अरविंद केजरीवाल के विशेष सचिव रहे प्रवेश रंजन झा सहित तीन अधिकारियों को नोटिस देकर जवाब मांगा है।

धर्म परिवर्तन के बाद भी अनुसूचित जाति के लोग कर रहे है अस्पृश्यता और सामाजिक भेदभाव का सामना

सुषमा रानी

नई दिल्ली*: ऑल इंडिया यूनाइटेड क्रिश्चियन्स मूवमेंट फॉर इक्वल राइट्स (एआईयूसीएमईआर) ने अनुसूचित जाति (एससी) ईसाइयों को आरक्षण के लाभ से वंचित करने की कड़ी निंदा की है और इसे असंवैधानिक और सांप्रदायिक करार दिया है। आज प्रेस क्लब ऑफ इंडिया में आयोजित एक संवाददाता सम्मेलने को संबोधित करते हुए एआईयूसीएमईआर के पदाधिकारियों ने कहा कि एआईयूसीएमईआर ने 1950 के संविधान (अनुसूचित जाति) आदेश के पैरा 3 को हटाने या संशोधित करने की मांग की, जो जातिगत आधार पर अनुसूचित जाति का दर्जा देने से ईसाई धर्म के अनुयायियों को वंचित करता है।

एआईयूसीएमईआर के अध्यक्ष ब्रदर जोस डेनियल ने कहा, "अनुसूचित जातियों के लिए आरक्षण का उद्देश्य उन सामाजिक और आर्थिक असमानताओं को दूर करना था, जिनका सामना वे परंपरागत रूप से करते आए हैं। धर्म के आधार पर इस लाभ से ईसाई अनुसूचित जातियों को बाहर रखना पूरी तरह से असंवैधानिक है और उनके साथ दोहरा अन्याय है। हम सरकार और न्यायपालिका से अनुरोध करते हैं कि इस भेदभावपूर्ण पैरा 3 को तुरंत हटाया जाए या इसमें संशोधन किया जाए, ताकि सभी अनुसूचित जातियों को समान रूप से अधिकार मिल सकें।"

आंदोलन ने इस बात पर जोर दिया कि अनुसूचित जाति के लोगों को अस्पृश्यता और सामाजिक भेदभाव का सामना उनके धर्म परिवर्तन के बावजूद करना पड़ता है। मंडल आयोग, अल्पसंख्यक आयोग, अनुसूचित जाति और जनजाति पर उच्च स्तरीय समिति और रंगनाथ मिश्रा आयोग जैसे विभिन्न रिपोर्टों ने अनुसूचित जाति के ईसाइयों के लगातार हो रहे सामाजिक शोषण को मान्यता दी है। यहां तक कि सुप्रीम कोर्ट ने भी मंडल आयोग के मामले में अपने फैसले में कहा था कि अनुसूचित जाति के लोगों को उनके धर्म परिवर्तन के बावजूद समान चुनौतियों का सामना करना पड़ता है।

ब्रदर जोस डेनियल ने यह भी कहा कि अनुसूचित जाति के ईसाइयों ने लगातार पैरा 3 को हटाने या इसमें संशोधन की मांग की है ताकि उन्हें भी आरक्षण का लाभ मिल सके। लेकिन हाल ही में न्यायमूर्ति के.जी. बालकृष्णन आयोग को सौंपी गई जिम्मेदारियों के जरिए अनुसूचित जाति की सूची में बदलाव का इशारा किया जा रहा है, जिसका समूह विरोध करता है। उनका मानना है कि धार्मिक आधार पर किए गए भेदभाव को समाप्त करना ही असली मुद्दा है।

सुप्रीम कोर्ट में चल रहे मामले में, एआईयूसीएमईआर ने यह स्पष्ट किया है कि अनुसूचित जाति के ईसाइयों को आरक्षण नीति में शामिल करना अब समय की मांग है। इस मुद्दे को लेकर समुदाय के साथ-साथ विभिन्न राजनीतिक दल और सामाजिक संगठनों ने भी समर्थन दिया है, लेकिन तथ्यों की गलत व्याख्या के कारण इसे रोका जा रहा है, प्रेस विज्ञप्ति में कहा गया।

हरियाणा के मतदाताओं ने भाजपा के वादे पर किया भरोसा, सरकार बनाने का दिया जनादेशः ऋषिपाल

स्वतंत्र सिंह भुल्लर

नई दिल्ली। अंबेडकर नगर विधानसभा के कर्मठ, जुझारू भाजपा नेता ऋषिपाल ने हरियाणा में भाजपा की ऐतिहासिक जीत पर खुशी का इजहार करते हुए कहा की मोदी की गारंटी पर हरियाणा वासियों ने अपना भरोसा जताया। यही कारण है कि हरियाणा के मतदाताओं ने तीसरी बार पूर्ण बहुमत से भाजपा को सरकार बनाने का जनादेश दिया। उन्होंने कहा कि ओबीसी मोर्चा भाजपा के राष्ट्रीय अध्यक्ष सांसद डॉक्टर के. लक्ष्मण ने हरियाणा में दिन रात मेहनत पर ओबीसी समाज को संगठित करने का कार्य किया। वही एससी मोर्चा भाजपा के राष्ट्रीय अध्यक्ष लाल सिंह आर्य ने हरियाणा के चुनाव में जनसंपर्क कर दलित समाज को मोदी सरकार की उपलब्धियां एवं नीतियों से अवगत कराया तथा उन्हें भाजपा के पक्ष में वोट देने के लिए तैयार किया। भाजपा नेता ऋषिपाल ने कहा कि दक्षिण दिल्ली के लोकप्रिय सांसद रामवीर सिंह बिधूड़ी हरियाणा के चुनाव में दिन रात लगे रहे। हरियाणा में भाजपा की बंपर जीत के पीछे इनका भी महत्वपूर्ण योगदान रहा। ऋषि पाल ने कहा के यशस्वी प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की नीतियों एवं कार्यों से देश की जनता खुश है। यही कारण है कि जहां केंद्र में तीसरी बार भाजपा की सरकार बनी, वहीं हरियाणा में भी पूर्ण बहुमत के साथ तीसरी बार भाजपा के सरकार बनी है।

डीयू के स्ट्रैटेजिक प्लान पर मुहर, आईडीपी के लिए बनी समिति; लिए गए महत्वपूर्ण निर्णय

दिल्ली विश्वविद्यालय की अकादमिक परिषद ने 2024 से 47 तक के लिए स्ट्रैटेजिक प्लान को मंजूरी दे दी है। साथ ही सांस्थानिक विकास योजना (आईडीपी) पर सदस्यों के विरोध के बाद कुलपति को अधिकृत करते हुए एक तीन सदस्यीय समिति का गठन किया गया है। बैठक में सेंट स्टीफेंस कॉलेज और डीयू में प्रवेश प्रक्रिया को लेकर विवाद का मुद्दा भी उठा। पाठ्यक्रमों में बदलावों को भी पारित किया गया।

नई दिल्ली। दिल्ली विश्वविद्यालय की अकादमिक परिषद की 1020वीं बैठक में 2024 से 47 तक स्ट्रैटेजिक प्लान को पारित कर दिया गया है। पहले इसको लेकर विरोध था और इसमें शामिल सामग्री को नकल की हुई बताया गया था। बदलाव के बाद इसे दोबारा बैठक में पेश किया गया। इसके साथ ही सांस्थानिक विकास योजना (आईडीपी) पर सदस्यों के विरोध के बाद कुलपति को अधिकृत करते हुए एक तीन सदस्यीय समिति का गठन किया गया है। इसके सुझावों के बाद आईडीपी को कुलपति स्वयं पारित करेंगे। बैठक की अध्यक्षता करते हुए कुलपति प्रो. योगेश सिंह ने स्ट्रैटजिक प्लान पर कहा कि विकसित भारत में अपनी भूमिका के लिए डीयू की यह योजना बहुत ही महत्वपूर्ण है।

यह प्लान एक व्यवस्थित प्रक्रिया है, जो मिशन-क्रिटिकल कार्य के लिए आवश्यक प्राथमिकताओं के प्रति प्रतिबद्धता बनाती है। इसका उद्देश्य आर्थिक, सामाजिक और सांस्कृतिक लाभ प्रदान करने वाले एक प्रमुख बहु-विषयक गहन अनुसंधान विश्वविद्यालय के रूप में हमारी स्थिति को मजबूत करना है।

नोएडा यमुना प्राधिकरण ने नियम में किया बड़ा बदलाव, जरूर जान लें नहीं तो...

परिवहन विशेष न्यूज

नोएडा यमुना प्राधिकरण ने औद्योगिक सेक्टरों में उद्योगों की स्थापना को बढ़ावा देने के लिए नियम में बड़ा बदलाव किया है। यह बदलाव उन आवंटियों पर नकेल कसने के लिए किया गया है जो औद्योगिक सेक्टरों में इकाई स्थापित करने से परहेज कर रहे थे। बदलाव का उद्देश्य औद्योगिक विकास को बढ़ावा देना है। आगे विस्तार से पढ़िए पूरी खबर

ग्रेटर नोएडा। औद्योगिक भूखंडों के स्वामित्व में बदलाव को लेकर यमुना प्राधिकरण Yamuna Authority ने नियम में बदलाव कर दिया है। आवंटी को इसकी अनुमति तभी दी जाएगी, जब वह आवंटित भूखंड का मानचित्र स्वीकृत कराकर उस पर निर्माण कार्य शुरू कर देगा।

औद्योगिक सेक्टरों में इकाई स्थापित करने से परहेज कर रहे आवंटियों पर नकेल कसने के लिए प्राधिकरण ने यह नियम लागू किया है। इससे औद्योगिक भूखंडों की खरीद फरोख्त में भी कमी आएगी। यमुना प्राधिकरण सेक्टर 28, 29, 32, 33, 24 व 24ए में औद्योगिक भूखंडों का आवंटन कर चुका है।

एमएसएमई के लिए हुआ भूखंडों का आवंटन

सेक्टर 32, 33 में काफी संख्या में एमएसएमई के लिए भूखंडों का आवंटन हुआ है, लेकिन औद्योगिकीकरण की रफ्तार काफी धीमी है। बाजार में औद्योगिक भूखंडों की बड़े पैमाने पर खरीद फरोख्त के लिए प्राधिकरण को स्वामित्व परिवर्तन, शेयर होल्डिंग में बदलाव, उत्पाद में बदलाव व रक्त संबंध में स्वामित्व में परिवर्तन के आवेदन लगातार मिल रहे हैं। इस कारण भ्रष्टाचार को पैर पसारने का मौका भी मिल रहा है।

प्राधिकरण ने नियम में बदलाव करने का फैसला किया

औद्योगिक सेक्टरों में उद्योगों की स्थापना की रफ्तार को तेज करने के लिए प्राधिकरण ने नियम में बदलाव करने का फैसला किया है। इसके तहत आवंटी की मृत्यु होने की स्थिति में पूर्व की तरह स्वामित्व में बदलाव हो सकेंगे। अन्यथा की स्थिति में आवंटी को स्वामित्व परिवर्तन, शेयर होल्डिंग में बदलाव, उत्पाद में बदलाव व रक्त संबंध में स्वामित्व में के लिए आवंटित भूखंड का मानचित्र स्वीकृत कराने के साथ निर्माण शुरू कराने पर ही प्राधिकरण आवेदन पर विचार करेगा।

इस मामले में यमुना प्राधिकरण के मुख्य कार्यपालक अधिकारी डा. अरुणवीर सिंह का कहना है कि औद्योगिक भूखंड के लिए स्वामित्व में बदलाव को बड़ी संख्या में आवेदन मिल रहे हैं। आवंटन की शर्तों का उल्लंघन के कारण औद्योगिक विकास के उद्देश्य पर विपरीत असर पड़ रहा है। इसलिए नियम में बदलाव किया गया है।

31 आवंटियों का रद हो सकता है भूखंड आवंटन

ग्रेटर नोएडा में मेडिकल डिवाइस पार्क (एमडीपी) के 31 आवंटियों का भूखंड आवंटन रद हो सकता है। भूखंड पर निर्माण शुरू कराने के लिए मानचित्र स्वीकृत न कराने पर प्राधिकरण इन आवंटियों को नोटिस भेजने जा रहा है। तीस दिन में मानचित्र स्वीकृत न कराने पर आवंटन रद हो जाएगा। इसके साथ ही एमडीपी में नए भूखंडों के आवंटन के लिए आवेदनों की जांच को समिति गठित की गई है।

समिति में गौतमबुद्ध विश्वविद्यालय के बायोटेक विभाग के दो प्रोफेसर के अलावा प्राधिकरण के अधिकारी शामिल हैं। आवेदकों की जांच के बाद अगले पंद्रह दिन में भूखंड आवंटन कर दिया जाएगा। यमुना प्राधिकरण के सेक्टर 28 में साढ़े तीन सौ एकड़ में मेडिकल डिवाइस पार्क विकसित किया जा रहा है। इसमें इलेक्ट्रानिक्स आधार चिकित्सा उपकरण बनाने की औद्योगिक इकाईयां स्थापित होंगी। केंद्रीय फार्मास्यूटिकल्स विभाग के संयुक्त सचिव आरपी सिंह ने मेडिकल डिवाइस पार्क का दौरा कर निर्माण कार्य की प्रगति का निरीक्षण किया था।

YEIDA Plot Scheme 2024 यमुना प्राधिकरण मेडिकल डिवाइस पार्क में 284 भूखंड हैं। इसमें से प्राधिकरण अब तक 74 भूखंडों का आवंटन कर चुका है। तीस आवंटियों को रजिस्ट्री के लिए प्राधिकरण की ओर से चेकलिस्ट जारी हो चुकी है। एमडीपी में तीन इकाईयों का निर्माण कार्य चल रहा है। प्राधिकरण के मुख्य कार्यपालक अधिकारी डा. अरुणवीर सिंह का कहना है कि मेडिकल डिवाइस पार्क केंद्र सरकार की महत्वाकांक्षी परियोजना है। इसमें भूखंड आवंटन के लिए विशेष नीति अपनाई गई है। औद्योगिक श्रेणी के लिए तय दरों से कम पर भूखंड आवंटित किए गए हैं।

इसके बावजूद आवंटी इकाई लगाने में रुचि नहीं ले रहे हैं। 31 आवंटियों को नोटिस भेजा जा राह है। तीस दिन में मानचित्र स्वीकृत कराकर निर्माण शुरू न करने पर उनका आवंटन रद कर दिया जाएगा। मेडिकल डिवाइस पार्क के विकास से रोजगार सृजन के साथ देश में चिकित्सीय उपकरणों की जरूरत को पूरा करने में मदद मिलेगी।

आवेदकों की जांच के लिए समिति गठित

प्राधिकरण ने अगस्त में मेडिकल डिवाइस पार्क के 27 भूखंड की योजना निकाली थी। इस योजना में प्राधिकरण को 59 आवेदन मिले हैं। इन आवेदनों की जांच के लिए समिति गठित की गई है। इसमें गौतमबुद्ध विश्वविद्यालय के बायोटेक विभाग के दो प्रोफेसर व प्राधिकरण के अधिकारी शामिल हैं। आवेदनों की तकनीकी जांच के बाद जो सही पाए जाएंगे, उन आवेदकों को साक्षात्कार के लिए आमंत्रित किया जाएगा। इसके आधार पर भूखंड आवंटन किया जाएगा।

अब प्लाज्मा और प्लेटलेट्स के लिए नहीं करनी पड़ेगी जेब ढीली, अस्पतालों को मिली मंजूरी

अब गंभीर बीमारी या आपात स्थिति में प्लाज्मा व प्लेटलेट्स के लिए जेब ढीली नहीं करने पड़ेगी। दरअसल नोएडा के जिला अस्पतालों में नई सुविधा शुरू होने जा रही है। इसके लिए लखनऊ से मंजूरी भी मिल गई है। उम्मीद है कि दिवाली से पहले अस्पताल प्रबंधन को लाइसेंस मिल सकता है। आगे विस्तार से पढ़िए पूरी खबर।

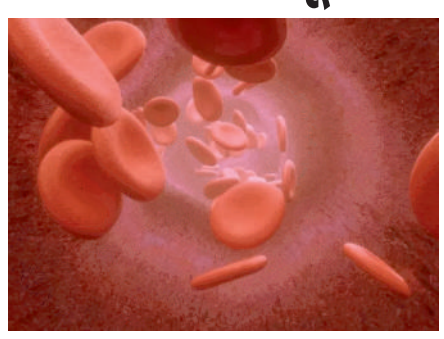

अस्पताल या केंद्रों में जेब ज्यादा ढीली करनी पड़ती है। अब जल्द ही यहां पर प्लेटलेट्स और प्लाज्मा अलग से देने की सुविधा होने जा रही है।

नोएडा। उत्तर प्रदेश के नोएडा में राजकीय अस्पतालों में भर्ती मरीजों को अब गंभीर बीमारी या आपात समय में प्लाज्मा व प्लेटलेट्स (Plasma and Platelets) के लिए जेब ढीली नहीं करनी पड़ेगी। जिला अस्पताल में ही गर्भवती महिलाओं समेत अन्य मरीजों के लिए अतिरिक्त ब्लड कंपोनेंट बनाने की सुविधा शुरू होने वाली है। इस सुविधा के शुरू होने से लोगों को काफी फायदा मिलेगा।

लखनऊ से लगभग मिल गई मंजूरी

कई महीनों की कवायद के बाद लखनऊ Lucknow स्थित औषधि अनुज्ञापन एवं नियंत्रण प्राधिकारी कार्यालय से लगभग मंजूरी मिल गई है। नई दिल्ली में फूड एवं ड्रग्स एडमिनिस्ट्रेशन के केंद्रीय महाऔषधि नियंत्रक (भारत) को लाइसेंस के लिए पत्र भेजा गया है। दिवाली से पहले अस्पताल प्रबंधन को लाइसेंस मिलने की उम्मीद है।

प्लाज्मा और प्लेटलेट्स अलग करके देने की सुविधा नहीं

रक्त केंद्र के प्रभारी डा. एचएम लवानिया ने बताया कि जिला अस्पताल या राजकीय जिला संयुक्त अस्पताल में भर्ती मरीजों को जरूरत के हिसाब से रक्त निशुल्क दिया जाता है। मगर अस्पताल में मरीजों के लिए प्लाज्मा और प्लेटलेट्स अलग करके देने की सुविधा नहीं है। ऐसे में इन मरीजों के तीमारदारों को आपात समय में निजी

औषधि निरीक्षक वैभव बब्बर ने किया था निरीक्षण

फरवरी माह में सीडीएसओ नार्थ जोन, गाजियाबाद के औषधि निरीक्षक प्रमोद कुमार और गौतमबुद्धनगर के औषधि निरीक्षक वैभव बब्बर ने निरीक्षण किया था। दोनों ने केंद्र को अतिरिक्त ब्लड कंपोनेंट की प्रक्रिया बनाने की अनुमति के लिए संस्तुति की थी। उसके बाद 30 अगस्त को औषधि निरीक्षक जय सिंह ने भी निरीक्षण के दौरान इन कमियों को दूर करने के लिए सत्यापन आख्या प्रस्तुत की।

निजी अस्पतालों के भर्ती मरीजों को देना होगा शुल्क

ब्लड बैंक Blood Bank के इंचार्ज का कहना है कि निजी अस्पतालों में भर्ती मरीजों को राजकीय केंद्रों से खून देने से पहले 1100 रुपये शुल्क लिया जाता है। ऐसे में सरकारी अस्पतालों के मरीजों को छोड़कर निजी अस्पताल या नर्सिंग होम में भर्ती मरीजों को जिला अस्पताल से प्लाज्मा व प्लेटलेट्स की जरूरत होगी तो उन्हें उसका शुल्क चुकाना होगा। हालांकि, अभी इसकी दरें तय नहीं हैं। लाइसेंस मिलने के बाद उच्च अधिकारियों के निर्देश पर दरें तय कर उन्हें लागू कर दिया जाएगा।

महंत यति नरसिंहानंद के करीबी अनिल यादव समेत चार गिरफ्तार, जुमे की नमाज को लेकर पुलिस का अलर्ट; ड्रोन से होगी निगरानी

उत्तर प्रदेश के गाजियाबाद में देवी मंदिर के बाहर 4 अक्टूबर को नारेबाजी करने के मामले में तीन और आरोपियों को अरेस्ट किया गया है। पुलिस ने शाहिद हासिम कुरैशी और जावेद को गिरफ्तार किया है. पुलिस अभी तक इस मामले में 23 लोगों को गिरफ्तार कर चुकी है। उधर देवी मंदिर के महंत यति नरसिंहानंद के करीबी अनिल यादव को भी कविनगर पुलिस ने पकड़ लिया है।

परिवहन विशेष न्यूज

गाजियाबाद। उत्तर प्रदेश के गाजियाबाद में वेव सिटी थाना पुलिस ने डासना स्थित देवी मंदिर के बाहर चार अक्टूबर को नारेबाजी करने और सरकारी कार्य में बाधा डालने के मामले में तीन और आरोपितों को गिरफ्तार किया है। वहीं, देवी मंदिर के महंत यति नरसिंहानंद के करीबी अनिल यादव को कविनगर पुलिस ने बृहस्पतिवार की रात को गिरफ्तार कर लिया है।

कम नहीं हो रहा तनाव

डासना देवी मंदिर के महंत यति नरसिंहानंद के पैगम्बर पर दिए विवादित बयान के बाद तनाव कम नहीं हो रहा है। आज शुक्रवार को जुमे की नमाज को लेकर पुलिस सतर्क है। बीते शुक्रवार की रात डासना देवी मंदिर पर हजारों की उग्र भीड़ पहुंच गई थी।

इस मामले में हिंदूवादी संगठनों ने 13 अक्टूबर को देवी मंदिर पर महापंचायत की घोषणा की हुई है। जबकि पुलिस ने पंचायत की अनुमति देने से मना कर दिया है। मामले में लगातार विरोध जारी है।

एसीपी वेव सिटी लिपि नगायच ने बताया कि बृहस्पतिवार को पकड़े गए आरोपितों में डासना का शाहिद, हासिम कुरैशी और जावेद हैं। इस प्रकरण में अब तक 23 आरोपितों की गिरफ्तारी हो चुकी है। अन्य आरोपियों की तलाश की जा रही है। जल्द ही उनको भी गिरफ्तार किया जाएगा।

पुलिस अलर्ट, ड्रोन से की जाएगी निगरानी

शुक्रवार यानी आज जुमे की नमाज व रामनवमी को लेकर पुलिस अलर्ट है। शांति व्यवस्था के लिए संवेदनशील इलाकों में ड्रोन से निगरानी की जाएगी। बृहस्पतिवार को जिले में विभिन्न स्थानों पर पुलिस ने फ्लैग मार्च कर शांति व्यवस्था बनाए रखने की अपील की है। पुलिस आयुक्त अजय मिश्र ने बताया कि अगर कोई माहौल खराब करने की कोशिश करता है तो उस पर सख्त कार्रवाई की जाएगी। उपद्रवियों पर नजर रखने के लिए अलग से टीम लगाई गई हैं।

बताया गया कि सभी डीसीपी, एसीपी, थाना प्रभारी, 251 क्यूआरटी, 16 प्लाटून पीएसी के साथ शुक्रवार को क्षेत्र में भ्रमणशील रहेंगे। सभी लोग शांतिपूर्ण तरीके से रहें।

वेव सिटी पुलिस द्वारा गिरफ्तार किए गए आरोपित

डासना स्थित देवी मंदिर के महंत यति नरसिंहानंद के करीबी अनिल यादव को कविनगर पुलिस ने बृहस्पतिवार की रात को गिरफ्तार किया है। अनिल यादव के खिलाफ पहले से एक केस वेव सिटी थाने में दर्ज है, जिसमें उनको बृहस्पतिवार को दिन में जमानत मिली थी। विवादित बयान देने के मामले में यादव ने अदालत में सरेंडर कर दिया था।

डीसीपी ग्रामीण एसएन तिवारी ने बताया कि अनिल यादव को शांति भंग की आशंका में गिरफ्तार किया गया है। आरोपित के खिलाफ आगे की कार्रवाई कविनगर पुलिस द्वारा की जाएगी।

कार्रवाई की मांग को लेकर जुटे थे मुस्लिम समाज के लोग

महंत यति नरसिंहानंद के विवादित बयान के बाद मुस्लिम समाज में आक्रोश है। मुस्लिम समाज के लोग यति नरसिंहानंद के खिलाफ कार्रवाई की मांग कर रहे हैं। वहीं, जमीयत उलामा-ए-हिंद के बैनर तले बड़ी संख्या में मुस्लिम समाज के लोग हाल ही में मोदीनगर तहसील पहुंचे थे और धरने पर बैठ गए थे। मुस्लिम समाज के लोगों ने यति नरसिंहानंद के खिलाफ कड़ी कार्रवाई की मांग की और पुलिस के खिलाफ नारेबाजी भी की।

वहीं, इस दौरान एसडीएम और एसीपी उन्हें मुस्लिम समाज के लोगों को समझाने की कोशिश की, लेकिन मुस्लिम समाज के लोग तहसील में ही धरने पर बैठे रहे थे।

राजनीति, राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ की प्राथमिकता में आज भी नहीं है

लोकेन्द्र सिंह राजपूत

जनसंघ को मजबूत करने में संघ के प्रचारक नानाजी देशमुख, बलराज मधोक, भाई महावीर, सुंदरसिंह भण्डारी, जगन्नाथराव जोशी, लालकृष्ण आडवाणी, कुशाभाऊ ठाकरे, रामभाऊ गोडबोले, गोपालराव ठाकुर और अटल बिहारी वाजपेयी ने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ इस दशहरे (12 अक्टूबर, 2024) पर अपने शताब्दी वर्ष में प्रवेश कर रहा है। महान स्वतंत्रता सेनानी डॉ. केशव बलिराम हेडगेवार ने वर्ष 1925 में जो बीज बोया था, आज वह वटवृक्ष बन गया है। उसकी अनेक शाखाएं समाज में सब दूर फैली हुई हैं। संघ लगातार दसों दिशाओं में बढ़ रहा है। 100 वर्ष की अपनी यात्रा में संघ ने समाज जीवन के विविध क्षेत्रों में राष्ट्रीय भाव का जागरण किया है, जिसमें राजनीतिक क्षेत्र भी शामिल है। हालांकि, आरएसएस विशुद्ध सांस्कृतिक एवं सामाजिक संगठन है। इसके बाद भी संघ के संबंध में कहा जाता है कि भारतीय राजनीति में उसका गहरा प्रभाव है। जब 'संघ और राजनीति' की बात निकलती है तो बहुत दूर तक नहीं जाती। दरअसल, राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ को निकटता से नहीं जानने वाले लोग इस विषय पर भ्रम फैलाने का काम करते हैं। राजनीति का जिक्र होने पर संघ के साथ भारतीय जनता पार्टी को नत्थी कर दिया जाता है। भाजपा, संघ परिवार का हिस्सा है, इस बात से किसी को इनकार नहीं है। लेकिन, भाजपा के कंधे पर सवार होकर संघ राजनीति करता है, यह धारणा बिलकुल गलत है। देश के उत्थान के लिए संघ का अपना एजेंडा है, सिद्धांत हैं, जब राजनीति उससे भटकती है तब संघ समाज से प्राप्त अपने प्रभाव का उपयोग करता है। सरकार चाहे किसी की भी हो। यानी संघ समाज शक्ति के आधार पर राजसत्ता को संयमित करने का प्रयास करता है। अचम्भित करने वाली बात यह है कि कई विद्वान संघ के विराट स्वरूप की अनदेखी करते हुए मात्र यह साबित करने का प्रयास करते हैं कि भाजपा ही संघ है और संघ ही भाजपा है।

राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ ने 1925 से 1948 तक राजनीतिक क्षेत्र में काम करने के विषय में सोचा भी नहीं था। राजनीति, संघ की प्राथमिकता में आज भी नहीं है। संघ के संस्थापक डॉ. हेडगेवार से जब किसी ने पूछा कि संघ क्या करेगा? तब डॉक्टर साहब ने उत्तर दिया- "संघ व्यक्ति निर्माण करेगा"। अर्थात संघ समाज के प्रत्येक क्षेत्र में कार्य करने के लिए ऐसे नागरिकों का निर्माण करेगा, जो अनुशासित, संस्कारित और देश भक्ति की भावना से ओतप्रोत हों। महात्मा गांधी की हत्या के बाद जब संघ को कुचलने के लिए राजनीति का निर्लज्ज उपयोग किया गया, तब पहली बार यह विचार ध्यान में आया कि संसद में संघ का पक्ष रखने वाला कोई राजनीतिक दल भी होना चाहिए। क्योंकि स्वयंसेवकों को बार-बार यह बात कचोट रही थी कि गांधीजी की हत्या के झूठे आरोप लगाकर विरोधियों ने सत्ता की ताकत से जिस प्रकार संघ को कुचलने का प्रयास किया है, भविष्य में इस तरह फिर से संघ को परेशान किया जा सकता है। राजनीतिक प्रताड़ना के बाद ही इस बहस ने जन्म लिया कि संघ को राजनीति में हस्तक्षेप करना चाहिए। विचार-मन्थन शुरू हुआ कि आरएसएस स्वयं को राजनीतिक दल में बदल ले यानी राजनीतिक दल बन जाए या राजनीति से पूरी तरह दूर रहे या किसी राजनीतिक दल को सहयोग करे या फिर नया राजनीतिक दल बनाए। स्वयं को राजनीतिक दल में परिवर्तित करने पर संघ का विराट लक्ष्य कहीं छूट जाता। उस समय कोई ऐसा राजनीतिक दल नहीं था, जो संघ की विचारधारा के अनुकूल हो। इसलिए किसी दल को सहयोग करने का विचार भी संघ को त्यागना पड़ा। इसी बीच, कांग्रेस की गलत नीतियों से मर्माहत होकर 8

अप्रैल, 1950 को केन्द्रीय मंत्रिमण्डल से इस्तीफा देने वाले डॉ. श्यामा प्रसाद मुखर्जी संघ के सरसंघचालक श्रीगुरुजी के पास सलाह-मशविरा करने के लिए आए थे। वे नया राजनीतिक दल बनाने के लिए प्रयास कर रहे थे। श्रीगुरुजी से संघ के कुछ कार्यकर्ता लेकर डॉ. मुखर्जी ने अक्टूबर, 1951 में जनसंघ की स्थापना की। वर्ष 1952 के आम चुनाव में जनसंघ ने एक नये राजनीतिक दल के रूप में भाग लिया।

जनसंघ को मजबूत करने में संघ के प्रचारक नानाजी देशमुख, बलराज मधोक, भाई महावीर, सुंदरसिंह भण्डारी, जगन्नाथराव जोशी, लालकृष्ण आडवाणी, कुशाभाऊ ठाकरे, रामभाऊ गोडबोले, गोपालराव ठाकुर और अटल बिहारी वाजपेयी ने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। चूंकि संघ के कार्यकर्ता ही जनसंघ का संचालन कर रहे थे इसलिए संघ ने जनसंघ को स्वतंत्र छोड़कर दूसरे आयामों पर अधिक ध्यान देना जारी रखा। साल में एक बार दीनदयाल उपाध्याय और श्रीगुरुजी बैठते थे। दीनदयालजी, गुरुजी को जनसंघ के संबंध में जानकारी देते थे। श्रीगुरुजी कुछ आवश्यक सुझाव भी पंडितजी को देते थे। जनसंघ से भाजपा तक आपसी संवाद की यह परम्परा आज तक कायम है। अब इसे कुछ लोग 'संघ की क्लास में भाजपा' कहें, तो यह उनकी अज्ञानता ही है। इस संदर्भ में श्रीगुरुजी के कथन को भी देखना चाहिए। उन्होंने 25 जून, 1956 को 'ऑर्गनाइजर' में लिखा था- "संघ कभी भी किसी राजनीतिक दल का स्वयंसेवी संगठन नहीं बनेगा। जनसंघ और संघ के बीच निकट का संबंध है। दोनों कोई बड़ा निर्णय परामर्श के बिना नहीं करते। लेकिन, इस बात का ध्यान रखते हैं कि दोनों की स्वायत्तता बनी रहे"।

वर्ष 1975 लोकतंत्र के लिए काला अध्याय लेकर आया था। तत्कालीन प्रधानमंत्री इंदिरा गांधी ने देश पर आपातकाल लाद दिया। संघ ने इसका पुरजोर तरीके से विरोध किया। संघ के कार्यकर्ताओं पर आपातकाल में बड़ी क्रूरता से अत्याचार किए गए। इसके बाद भी संघ लोकतंत्र की रक्षा के लिए आपातकाल का विरोध करता रहा। वर्ष 1977 में जनता पार्टी का गठन किया गया। जनसंघ का जनता पार्टी में विलय हो गया। लेकिन, कम्युनिस्टों ने ऐसी परिस्थितियां खड़ी कर दी की जनसंघ के नेताओं को जनता पार्टी से बाहर आना पड़ा। सन् 1980 में उन्होंने भारतीय जनता पार्टी की स्थापना की। आज भाजपा देश की सबसे बड़ी पार्टी के नाते देश चला रही है।

राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ राष्ट्र की संप्रभुता के विषयों पर लगातार चिंतन करता रहता है। संघ की अखिल भारतीय प्रतिनिधि सभा और अखिल भारतीय कार्यकारी मंडल अनेक अवसर पर भारतीय राजनीति को संदेश देने के प्रस्ताव पारित कर चुके हैं। राष्ट्रीय भाषा-नीति-1958, गोवा आदि का संलग्न प्रांतों में विलय-1964, साम्प्रदायिक दंगे और राष्ट्रीय एकता परिषद-1968, राष्ट्र एक अखण्ड इकाई-1978, विदेशी घुसपैठिये-1984, पूर्वी उत्तरांचल 'इनर लाइन आवश्यक-1987, अलगाववादी षड्यंत्र-1988, आतंकवाद और सरकार की ढुलमुल नीति-1990, सांप्रदायिक आधार पर आरक्षण न हो-2005 जैसे अनेक प्रस्ताव हैं, जिन्होंने राष्ट्रीय दिशा से भटकती राजनीति को सचेत किया है। संघ के प्रयत्नों के कारण ही देश में आज समान नागरिक संहिता पर बहस जारी है। वहीं, जम्मू-कश्मीर से स्थायी दिखनेवाली 'अस्थाई' अनुच्छेद-370 एवं 35ए समाप्त किए जा सके हैं। भारत और हिन्दू अस्मिता का प्रतीक रामजन्मभूमि का मुद्दा भी संघ की ताकत के कारण ही राजनीतिक बहसों में शामिल हो सका है, जिसका परिणाम आज अयोध्या में भव्य श्रीराम मंदिर के रूप में हमें दिखायी दे रहा है। चुनाव प्रक्रिया में धन के प्रभाव को रोकने और अपराधियों के चुनाव लड़ने को प्रतिबंधित कराने के लिए संघ ने सामाजिक अभियान चलाया है। इस संबंध में प्रतिनिधि सभा के वर्ष 1996 के प्रस्ताव को देखना चाहिए, जो राजनीति और भ्रष्टाचार पर केन्द्रित था। वर्तमान में गोहत्या पर बहस छिड़ी हुई है। गौ-संरक्षण के लिए संघ ने अथक प्रयास किए हैं। संघ के आंदोलनों से बने जन दबाव के कारण कांग्रेस सरकारों को भी राज्यों में गोहत्या प्रतिबंध के संबंध में कानून लागू करने पड़े। असम और पश्चिम बंगाल में 1950 में, तत्कालीन बंबई प्रांत में 1954 में, उत्तर प्रदेश, पंजाब और बिहार में 1955 में गौहत्या प्रतिबंध संबंधी कानून बनाये गये, उस वक्त वहां कांग्रेस की सरकारें थीं। इसी तरह कांग्रेस के समय में ही तमिलनाडु में 1958 में, मध्यप्रदेश में 1959 में, ओडीसा में 1960 में तो कर्नाटक में 1964 में संबंधित कानूनों को लागू किया गया।

जब कभी भारतीय राजनीति असंतुलित हुई है, संघ ने हस्तक्षेप किया है। अर्थात सरकारों ने वोटबैंक की राजनीति के फेर में जब-जब राष्ट्रीय एकता के मूल प्रश्न की अनदेखी की है तब-तब संघ ने राजनीति में हस्तक्षेप किया है। भाजपा भले ही संघ परिवार का हिस्सा है, लेकिन संघ ने स्वयं को दलगत राजनीति से हमेशा दूर ही रखा है। देश की सामयिक परिस्थितियों और राजनीति के प्रति संघ सजग रहता है। राजनीति समाज के प्रत्येक अंग को प्रभावित करती है। संघ इसी समाज का सबसे बड़ा सांस्कृतिक संगठन है। इसलिए संघ और राजनीति का संबंध स्वाभाविक भी है। 'संघ और राजनीति' पुस्तक के लेखक एवं राज्यसभा सांसद प्रो. राकेश सिन्हा कहते हैं- "सांस्कृतिक संगठन का तात्पर्य झाल-मंजीरा बजाने वाला संगठन न होकर राष्ट्रवाद को जीवंत रखने वाला आंदोलन है। इसीलिए आवश्यकतानुसार संघ राजनीति में हस्तक्षेप करता है, जो आवश्यक और अपेक्षित दोनों है"।

हम समझ सकते हैं कि संघ राजनीति का उपयोग इतना भर ही करता है कि उसके मार्ग में बेवजह अड़चन खड़ी न की जाएं। मिथ्या आरोप संघ पर न लगाए जाएं। संघ के पास राजनीतिक शक्ति नहीं है, यह सोचकर कोई उसके वैचारिक आग्रह की अनदेखी न कर सके। एक बात स्पष्टतौर पर समझ लेनी चाहिए कि संघ सीधे चुनाव में भाग नहीं लेता है और भविष्य में भी नहीं लेगा। संघ का राजनीति में प्रभाव अपनी उस ताकत से है, जो अपने 100 वर्ष के कार्यकाल में जनता के भरोसे से हासिल हुई है। देश के खिलाफ कोई ताकत खड़ी होने का प्रयास करती है तब सम्पूर्ण समाज संघ की ओर उम्मीद से देखता है। संकट के समय में भी संघ से ही मदद की अपेक्षा समाज करता है।

– :सौजन्य :–
ईवी ड्राइव द फ्यूचर
EV Drive the Future

एक्साइड इंडस्ट्रीज ने ईवी बैटरी-केंद्रित शाखा में 100 करोड़ रुपये का किया अतिरिक्त निवेश

परिवहन विशेष न्यूज

भारत में प्रमुख एसिड-बैटरी आपूर्तिकर्ता एक्साइड इंडस्ट्रीज लिमिटेड ने शुक्रवार को अपनी पूर्ण स्वामित्व वाली शाखा एक्साइड एनर्जी सॉल्यूशंस लिमिटेड में राइट्स के आधार पर 100 करोड़ रुपये के अतिरिक्त निवेश की घोषणा की।

एक्सचेंज फाइलिंग में कहा गया है कि इससे ईईएसएल में कंपनी का कुल निवेश 2,852 करोड़ रुपये हो गया है।

मार्च 2022 में निगमित ईईएसएल भारत के इलेक्ट्रिक वाहन बाजार और स्थिर अनुप्रयोगों के लिए लिथियम-आयन बैटरी सेल, मॉड्यूल और पैक के निर्माण और बिक्री के व्यवसाय में लगी हुई है।

इस वर्ष अप्रैल में ईईएसएल पर तब ध्यान गया था जब हुंडई मोटर कंपनी और किआ कॉरपोरेशन ने ईवी बैटरी स्थानीयकरण के लिए कंपनी के साथ समझौते की घोषणा की थी।

ईईएसएल में 100 करोड़ रुपये का नया निवेश एक्साइड इंडस्ट्रीज द्वारा सहायक कंपनी में इतनी ही राशि डाले जाने के एक महीने बाद किया गया।

यह निवेश ऐसे समय में किया गया है जब ईईएसएल लिथियम-आयन बैटरी सेल और मॉड्यूल के विनिर्माण और बिक्री के लिए बेंगलुरु में एक ग्रीन फील्ड प्लांट स्थापित करने की प्रक्रिया में है।

एक्साइड इंडस्ट्रीज ने कहा, ₹इक्विटी निवेश का उद्देश्य उपरोक्त ग्रीन फील्ड परियोजना को वित्तपोषित करना तथा इसकी विभिन्न वित्तपोषण आवश्यकताओं को पूरा करना है।₹

वित्त वर्ष 2024 में ईईएसएल ने 239.14 करोड़ रुपये का कारोबार किया, जो पिछले वर्ष के 112.05 करोड़ रुपये की तुलना में दोगुने से भी अधिक था।

एनएसई पर एक्साइड इंडस्ट्रीज के शेयर 1.39% गिरकर 512.15 रुपये पर बंद हुए, जबकि बेंचमार्क निफ्टी 50 में 0.07% की मामूली वृद्धि हुई।

कोलकाता मुख्यालय वाली इस कंपनी के शेयर में इस वर्ष अब तक 61% तथा पिछले 12 महीनों में 98% की वृद्धि हुई है।

कंपनी पर नज़र रखने वाले 23 विश्लेषकों में से नौ ने स्टॉक को ₹खरीदें₹ रेटिंग दी है, छह ने ₹होल्ड₹ करने का सुझाव दिया है, और आठ ने ₹बेचनें₹ की सलाह दी है। 12 महीने के विश्लेषकों के मूल्य लक्ष्य का औसत 2.1% की संभावित गिरावट का संकेत देता है।

हुंडई मोटर ग्रुप और सिंगापुर ने टिकाऊ ऊर्जा समाधान के लिए सहयोग पर किए हस्ताक्षर

परिवहन विशेष न्यूज

हुंडई मोटर ग्रुप ने नई ऊर्जा के क्षेत्र में नानयांग टेक्नोलॉजिकल यूनिवर्सिटी, सिंगापुर (एनटीयू) के साथ एक सहयोगात्मक अनुसंधान समझौते पर हस्ताक्षर किए हैं। इस साझेदारी में तीन साल का अनुसंधान सहयोग शामिल होगा, जिसमें हाइड्रोजन ऊर्जा व्यवसाय और उन्नत ऊर्जा प्रणाली के क्षेत्रों पर ध्यान केंद्रित किया जाएगा।

समूह और विश्व स्तर पर प्रसिद्ध विश्वविद्यालय एनटीयू के बीच इस सहयोग का उद्देश्य कार्बन तटस्थता प्राप्त करने के और करीब पहुंचना है। साझेदारी का ध्यान समूह की उन्नत ऊर्जा प्रौद्योगिकियों का लाभ उठाते हुए वैकल्पिक ऊर्जा स्रोतों को विकसित करने पर होगा जो सिंगापुर की अनूठी विशेषताओं के लिए उपयुक्त हैं।

हुंडई मोटर ग्रुप इनोवेशन सेंटर सिंगापुर (HMGICS) के उपाध्यक्ष और सीईओ ह्यून सुंग पार्क ने कहा, ₹HMGICS हुंडई मोटर ग्रुप के भविष्य के मोबिलिटी इनोवेशन के लिए एक वैश्विक केंद्र है।₹ ₹इस साझेदारी के माध्यम से, हमारा लक्ष्य अभिनव प्रौद्योगिकियों के क्षेत्र में अपने शोध को गति देना है, जिससे अंततः हमारे संधारणीय मोबिलिटी समाधानों की व्यावसायिक व्यवहार्यता बढ़ेगी।₹

8 अक्टूबर को रिट्ज कार्लटन सिंगापुर में सिंगापुर-कोरिया बिजनेस फोरम में हुए हस्ताक्षर समारोह में हुंडई मोटर कंपनी के अध्यक्ष और सीईओ जेहून चांग; हुंडई इंजीनियरिंग एंड कंस्ट्रक्शन (हुंडई ईएंडसी) के अध्यक्ष और सीईओ यंग-जून यून; एचएमजीआईसीएस के उपाध्यक्ष और सीईओ ह्यून सुंग पार्क; एनटीयू के उपाध्यक्ष (उद्योग) प्रोफेसर लैम खिन योंग; एनटीयू में ऊर्जा अनुसंधान संस्थान की कार्यकारी निदेशक प्रोफेसर माधवी श्रीनिवासन; कोरिया गणराज्य के व्यापार, उद्योग और ऊर्जा मंत्री डुक-ग्यून आहन; और सिंगापुर के जनशक्ति मंत्री और व्यापार और उद्योग के दूसरे मंत्री डॉ. टैन सी लेंग ने भाग लिया।

एक शहर-राज्य के रूप में, सिंगापुर को अपने सीमित प्राकृतिक संसाधनों और प्राकृतिक गैस पर भारी निर्भरता के कारण कार्बन तटस्थता हासिल करने में चुनौतियों का सामना करना पड़ता है, जो इसके बिजली उत्पादन का 95% हिस्सा है। सिंगापुर को कार्बन तटस्थता हासिल करने के अपने प्रयासों में हाइड्रोजन ऊर्जा और उन्नत ऊर्जा प्रणाली की बढ़ती भूमिका देखने की उम्मीद है।

सिंगापुर में हाइड्रोजन उत्पादन तकनीकों और व्यवसायों को अपनाने का अध्ययन करना मुख्य फोकस क्षेत्रों में से एक होगा। इसमें हुंडई मोटर ग्रुप की अभिनव संसाधन-चक्र हाइड्रोजन उत्पादन तकनीकों का कार्यान्वयन शामिल है: प्लास्टिक-से-हाइड्रोजन (P2H) और अपशिष्ट-से-हाइड्रोजन (W2H) सिस्टम। W2H हाइड्रोजन का उत्पादन करने के लिए भोजन और सीवेज कीचड़ जैसे जैविक कचरे का उपयोग करता है, जबकि P2H गैर-पुनर्नवीनीकरण प्लास्टिक का उपयोग करता है।

उन्नत ऊर्जा प्रणाली अनुसंधान के क्षेत्र में, समूह और एनटीयू ने एक ऐसा समाधान विकसित करने पर ध्यान केंद्रित किया है जो सिंगापुर जैसे शहरी देशों के लिए उपयुक्त है। उन्नत ऊर्जा प्रणाली अपने मॉड्यूलर डिजाइन के कारण आसान स्थापना और उच्च सुरक्षा स्तरों के लाभ प्रदान करती है, जो सिंगापुर में कार्बन तटस्थता प्राप्त करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है।

एचएमजीआईसीएस ने एनटीयू और एजेंसी फॉर साइंस, टेक्नोलॉजी एंड रिसर्च (ए*स्टार) के साथ त्रिपक्षीय अनुसंधान केंद्र की स्थापना के लिए एक संयुक्त हस्ताक्षर समारोह भी आयोजित किया। कॉर्पोरेट लैब प्रोग्राम एआई, रोबोटिक्स और 3डी प्रिंटिंग जैसे अभिनव विनिर्माण डोमेन में अनुसंधान करने के लिए तैयार है।

यह महत्वपूर्ण उपलब्धि सिंगापुर में सहयोगात्मक भावी गतिशीलता पारिस्थितिकी तंत्र के निर्माण के लक्ष्य के साथ, नवीन प्रौद्योगिकियों को अपनाने में नवाचारों को गति प्रदान करेगी।

एनटीयू के उपाध्यक्ष (उद्योग) प्रोफेसर लैम खिन योंग ने कहा, ₹एनटीयू सिंगापुर और हुंडई मोटर ग्रुप के बीच शोध साझेदारी दर्शाती है कि कार्बन तटस्थता की दौड़ सहित वास्तविक दुनिया के मुद्दों को संबोधित करने के लिए अभिनव और प्रासंगिक समाधान विकसित करने में उद्योग के साथ घनिष्ठ सहयोग कितना महत्वपूर्ण है।₹ ₹हम सिंगापुर और वैश्विक समाज के लिए अभिनव और टिकाऊ समाधान विकसित करने के लिए टिकाऊ ऊर्जा, एआई, रोबोटिक्स, 3डी प्रिंटिंग और उन्नत सामग्री जैसे क्षेत्रों में एनटीयू की मुख्य शक्तियों का लाभ उठाते हुए हुंडई मोटर ग्रुप के साथ अपनी दीर्घकालिक साझेदारी का निर्माण जारी रखेंगे।"

जेमोपाई ने इलेक्ट्रिक स्कूटर पर ₹17,000 तक का फेस्टिव कैशबैक ऑफर किया शुरू

परिवहन विशेष न्यूज

इलेक्ट्रिक वाहन उद्योग में एक जानी-मानी कंपनी जेमोपाई ने त्योहारी सीजन के दौरान उपभोक्ताओं को आकर्षित करने के उद्देश्य से एक फेस्टिवल ऑफर पेश किया है। 7 अक्टूबर 2024 से 6 नवंबर 2024 तक चलने वाला यह सीमित अवधि का ऑफर राइडर, राइडर सुपरमैक्स और एस्ट्रिड लाइट सहित लोकप्रिय इलेक्ट्रिक स्कूटर मॉडल पर कैशबैक लाभ प्रदान करता है। ग्राहक जेमोपाई ई-स्कूटर के चुनिंदा मॉडल पर ₹17,000 तक का कैशबैक प्राप्त कर सकते हैं।

इस ऑफर के तहत, राइडर मॉडल अब ₹14,500 के कैशबैक के बाद ₹56,350 में उपलब्ध है, जो इसकी मूल कीमत ₹70,850 से कम है। यह स्कूटर प्रति चार्ज* 90 किमी की रेंज प्रदान करता है और इसमें USB चार्जिंग पोर्ट शामिल है, जो यात्रियों की जरूरतों को पूरा करता है। राइडर सुपरमैक्स, जिसे एक किफायती हाई-स्पीड इलेक्ट्रिक स्कूटर के रूप में पेश किया गया है, की कीमत ₹15,000 कैशबैक के बाद ₹64,999 है, जो ₹79,999 से कम है। यह प्रति चार्ज* 100 किमी की रेंज प्रदान करता है और

इसमें जेमोपाई कनेक्ट के माध्यम से स्मार्ट कनेक्टिविटी शामिल है। एस्ट्रिड लाइट मॉडल, जिसकी मूल कीमत ₹1,11,195 थी, अब ₹17,000 के कैशबैक के साथ ₹94,195 में उपलब्ध है यह मॉडल प्रति चार्ज 200 किमी की रेंज प्रदान करता है* और असीमित किलोमीटर* के साथ 3 साल की वारंटी के साथ आता है।

जेमोपाई के प्रबंध निदेशक और संस्थापक अमित राज सिंह ने बताया कि इस फेस्टिवल बोनान्ज़ा ऑफर का उद्देश्य इलेक्ट्रिक वाहनों को अधिक किफायती बनाकर उन्हें बढ़ावा देना है, जो कंपनी के टिकाऊ परिवहन प्रणाली के दृष्टिकोण को दर्शाता है।

रॉयल इन्फील्ड क्लासिक 650 नवंबर में हो सकती है लॉन्च, रेट्रो लुक से लेकर पैरेलल-ट्विन इंजन से होगी लैस

परिवहन विशेष न्यूज

650 के लॉन्चिंग की तैयारी चल रही है। इसे नवंबर 2024 में गोवा में होने जा रहे मोटोवर्स में पेश किया जा सकता है। इस बाइक का लुक रेट्रो रहने वाला है। इसके साथ ही यह दो कलर स्कीम के साथ ही वायर स्पोक और अलॉय व्हील दोनों ही ऑप्शन में आ सकती है। इस बाइक की कीमत 3 .25 लाख रुपये के करीब रह सकती है।

नई दिल्ली। रॉयल एनफील्ड क्लासिक 650 को इसके लॉन्च होने से पहले कई बार स्पॉट किया जा चुका है। इस दौरान बाइक की कई डिटेल्स देखने के लिए मिली। अब यह लॉन्च के लिए तैयार है। इसे नवंबर 2024 में लॉन्च हो सकती है। इसका लुक रेट्रो स्टाइल रहने वाला है। यह बाइक रॉयल एनफील्ड 650 ट्विन्स लाइनअप में सबसे नई होने वाली है। यह काफी दिलचस्प बाइक रहने वाली है। आइए जानते हैं कि Royal Enfield Classic 650 किन फीचर्स के साथ आ सकती है।

डिजाइन

Classic 650 का डिजाइन काफी हद तक क्लासिक 350 जैसा ही देखने के लिए मिल सकता है। अगर ऐसा होता है तो क्लासिक 650 में गोल एलईडी हेडलाइट, टियरड्रॉप के आकार का फ्यूल टैंक, त्रिकोणीय साइड पैनल और घुमावदार फेंडर देखने के लिए मिलेंगे।

कलर ऑप्शन

रिपोर्ट्स के मुताबिक, रॉयल एनफील्ड क्लासिक 650 को दो कलर ऑप्शन में लाया जा सकता है, जो मैरून और क्रीम डुअल-टोन कलर हो सकते हैं। यह कलर इसके विंटेज लुक और भी बढ़ा देंगे। यह वायर स्पोक और अलॉय व्हील दोनों ही ऑप्शन में आ सकती है। यह व्हील रेट्रो-मॉडर्न फ्यूजन को बनाए रखते हैं, जिसके लिए रॉयल एनफील्ड को जाना जाता है।

इंजन

बाइक में 648 cc, पैरेलल-ट्विन, एयर और ऑयल-कूल्ड इंजन देखने के लिए मिल सकता है। यह इंजन 47 bhp की पावर और 52 Nm का टॉर्क जनरेट करेगा। इसके साथ ही बाइक को छह-स्पीड गियरबॉक्स से जोड़ा जा सकता है। इस इंजन को काफी रिफाईनमेंट, परफॉरमेंस और ट्विन एग्जॉस्ट की आवाज रहने वाला बताया जा रहा है।

फीचर्स

क्लासिक 650 में स्टील क्रैडल चेसिस देखने के लिए मिल सकता है। जिसे टेलिस्कोपिक फोर्क और ट्विन शॉक एब्जॉर्बर द्वारा सस्पेंड किया जा सकता है। इसके ब्रेकिंग एप्लीकेशन को ध्यान में रखते हुए, उसमें वायर-स्पोक व्हील्स हो सकते हैं, जो ट्यूब-टाइप टायर के साथ आ सकते हैं। इसके ब्रेक की बात करें तो आगे और पीछे दोनों पहियों में डिस्क ब्रेक हो सकता है।

कीमत

रॉयल एनफील्ड क्लासिक 650 को इस साल 2024 में गोवा में होने जा रहे मोटोवर्स में पेश किया जा सकता है। इस बाइक की एक्स-शोरूम कीमत लगभग 3.25 लाख रुपये तक हो सकती है।

बैटरी पैक से लेकर पावरट्रेन तक हुंडई ईवी स्थानीयकरण प्रयासों में लाएगी तेजी

परिवहन विशेष न्यूज

हुंडई मोटर इंडिया लिमिटेड (HMIL) ने कहा कि वह भारत में एक मजबूत इलेक्ट्रिक वाहन पारिस्थितिकी तंत्र विकसित करने की अपनी प्रतिबद्धता के तहत बैटरी पैक और संबंधित घटकों के स्थानीयकरण के बाद पावरट्रेन के स्थानीयकरण पर ध्यान केंद्रित करेगी। देश की दूसरी सबसे बड़ी कार निर्माता कंपनी अपनी ईवी रणनीति को आगे बढ़ाएगी, भले ही भारत में इलेक्ट्रिक कार बाजार लगातार विकसित हो रहा हो।

अपने विद्युतीकरण प्रयासों में, एचएमआईएल इस वित्तीय वर्ष की चौथी तिमाही तक क्रेटा ईवी सहित चार नए ईवी मॉडल पेश करने के लिए तैयार है। कंपनी की आईपीओ योजनाओं की घोषणा के दौरान हुंडई मोटर इंडिया के प्रबंध निदेशक अनसू किम के अनुसार, कंपनी बैटरी पैक, ड्राइवट्रेन और अन्य प्रमुख घटकों को कवर करते हुए ईवी आपूर्ति श्रृंखला को सक्रिय रूप से स्थानीय बना रही है, साथ ही चार्जिंग इंफ्रास्ट्रक्चर में भी निवेश कर रही है।

हुंडई ने भारत में अपनी कोना ईवी को बंद कर दिया है, लेकिन यह वर्तमान में ₹40 लाख से अधिक कीमत वाला एक प्रीमियम ईवी मॉडल पेश करती है। जबकि भारतीय ईवी बाजार अभी भी उभर रहा है, एचएमआईएल को 2030 तक मजबूत वृद्धि की उम्मीद है, जो सरकारी पहलों और उद्योग के बढ़ते फोकस से प्रेरित है। हुंडई मोटर कंपनी की वैश्विक ईवी और बैटरी विशेषज्ञता के समर्थन से एचएमआईएल एक स्थानीय ईवी पारिस्थितिकी तंत्र स्थापित करने के लिए काम कर रही है और कथित तौर पर अपने ईवी उत्पादन प्रयासों का समर्थन करने के लिए नए आपूर्तिकर्ताओं को शामिल किया है।

किम ने कहा, ₹हम बैटरी पैक असेंबली सहित अपनी आपूर्ति श्रृंखला को स्थानीय बना रहे हैं और ईवी पारिस्थितिकी तंत्र को बढ़ाने के लिए स्थानीय आपूर्तिकर्ताओं के साथ सहयोग कर रहे हैं। हम ईवी पावरट्रेन और अन्य संबंधित भागों को स्थानीय बनाने पर भी काम कर रहे हैं। हालांकि मैं अपने ईवी प्लेटफ़ॉर्म के लिए नए विक्रेताओं की सटीक संख्या निर्दिष्ट नहीं कर सकता, लेकिन हम इस बदलाव को आगे बढ़ाने के लिए स्थानीय और वैश्विक दोनों आपूर्तिकर्ताओं को लगातार शामिल कर रहे हैं।₹

इसके अलावा एचएमआईएल ने चेन्नई में एक बैटरी असेंबली प्लांट में निवेश किया है, जिसकी शुरुआती क्षमता अगले साल तक सालाना 75,000 बैटरी पैक की होगी। कंपनी ने ईवी बैटरी की असेंबली के लिए अपने चेन्नई मैन्युफैक्चरिंग प्लांट का एक हिस्सा मोबिस इंडिया लिमिटेड को पट्टे पर दिया है। ये बैटरियां हुंडई और उसकी सहयोगी कंपनी किआ को सप्लाई की जाएंगी, जिससे बैटरी पैक के आयात की लागत कम करने में मदद मिलेगी।

किम ने कहा कि ईवी बाजार अत्यधिक गतिशील है, जिसमें भू-राजनीतिक कारक, ग्राहकों की बदलती प्राथमिकताएं और बदलती सरकारी नीतियां शामिल हैं। हुंडई अपनी विविध तकनीकी क्षमताओं और रणनीतिक लचीलेपन की बदौलत इन बदलावों के अनुकूल ढलने के लिए पूरी तरह तैयार है।

टीवीएस ने आईक्यूब ईवी स्कूटर पर 30,000 रुपये के फेस्टिव कैशबैक ऑफर की घोषणा की

परिवहन विशेष न्यूज

टीवीएस मोटर कंपनी ने अपने टीवीएस आईक्यूब इलेक्ट्रिक स्कूटर पर विशेष त्यौहारी सीज़न ऑफ़र की घोषणा की है, जिसमें चुनिंदा राज्यों में 31 अक्टूबर, 2024 तक ₹30,000 तक के कैशबैक लाभ उपलब्ध हैं। टीवीएस आईक्यूब ईवी की कीमत ₹90,681 (महाराष्ट्र में प्रभावी एक्स-शोरूम कीमत) है।

टीवीएस आईक्यूब ईवी एस वेरिएंट के लिए, तमिलनाडु, पुडुचेरी, उत्तर प्रदेश, उत्तराखंड, राजस्थान, कर्नाटक, केरल, आंध्र प्रदेश, तेलंगाना, गुजरात, ओडिशा और महाराष्ट्र के ग्राहक बिना किसी अतिरिक्त लागत के ₹5,999 मूल्य की विस्तारित 5-वर्ष/70,000 किमी वारंटी का लाभ उठा सकते हैं। इसके अतिरिक्त, चुनिंदा राज्यों में टीवीएस आईक्यूब ईवी 2.2 kWh वेरिएंट के लिए ₹17,300 तक और 3.4 kWh वेरिएंट के लिए ₹20,000 तक के कैशबैक ऑफ़र उपलब्ध हैं। जिन ग्राहकों ने 15 जुलाई, 2022 से पहले टीवीएस आईक्यूब ईवी एसटी वेरिएंट की प्री-बुकिंग की है, वे 5.1 kWh या 3.4 kWh ST वेरिएंट की खरीद पर ₹10,000 के लॉयल्टी बोनस के लिए पात्र हैं।

इसके अलावा रिटेल फाइनेंस ऑफर में चुनिंदा बैंक कार्ड पर ₹10,000 तक का कैशबैक, ₹7,999 का कम डाउन पेमेंट विकल्प और ₹2,399 से शुरू होने वाली ईएमआई शामिल हैं। इन ऑफर्स का उद्देश्य इलेक्ट्रिक मोबिलिटी को और अधिक सुलभ बनाना है, जबकि टीवीएस मोटर के स्थिरता पर ध्यान केंद्रित करना है।

टीवीएस आईक्यूब इलेक्ट्रिक स्कूटर में 3.4 kWh की लिथियम-आयन बैटरी है जो एक बार चार्ज करने पर 100 किमी तक की रेंज देती है। यह 4.4 kW की इलेक्ट्रिक मोटर द्वारा संचालित है, जो 78 किमी/घंटा की अधिकतम गति प्रदान करती है। स्कूटर तीन राइडिंग मोड- इकोनॉमी, पावर और रिवर्स के साथ आता है और फ़ास्ट चार्जिंग को सपोर्ट करता है।

इसमें नेविगेशन और स्मार्टफोन इंटीग्रेशन के लिए SmartXonnect के साथ 7 इंच का TFT डिस्प्ले है। iQube में रीजेनरेटिव ब्रेकिंग, LED लाइटिंग और 17 लीटर का अंडर-सीट स्टोरेज शामिल है। यह 5 साल की वारंटी और जियोफेंसिंग, रिमोट डायग्नोस्टिक्स और ओवर-द-एयर अपडेट जैसी विभिन्न कनेक्टिविटी सुविधाएँ भी प्रदान करता है।

भारतीय संस्कृति पर मीडिया का प्रभाव

विजय गर्ग

वैश्वीकरण और पश्चिमीकरण के उद्भव के साथ, हमारी संस्कृति को एक बड़ा झटका लगा है और इससे हमारी प्रतिष्ठा और गौरव में भारी अस्थिरता आई है। संचार मीडिया एक समय था जब एक साधारण लैंडलाइन टेलीफोन बहुत बड़ी बात मानी जाती थी। फिर टेलीविजन का युग आया, समाचार एजेंसियों को एक चिंगारी मिली। कंप्यूटर के प्रवेश के साथ, हमने दुनिया को उलट-पुलट कर दिया है। इंटरनेट ने दुनिया को केवल एक क्लिक की दूरी पर सीमित करने के लिए प्रवेश की व्यापक गुंजाइश दी है। फेसबुक जैसी सोशल इंटरएक्टिव साइटों, ट्विटर जैसी ब्लॉगिंग साइटों ने बातचीत को बहुत आसान बना दिया है।

वर्तमान युग में जनसंचार माध्यमों का बहुत महत्व है। मीडिया एक आवश्यकता से अधिक एक स्टाइल स्टेटमेंट बन गया है। लोग अपने जीवन की हर बुनियादी आवश्यकता के लिए मीडिया पर निर्भर हो गये हैं। लोगों ने मोबाइल इंटरनेट के रूप में दुनिया को अपनी जेब में समेट लिया है। बच्चों से लेकर बूढ़ों तक हर कोई मीडिया के जाल में फंस गया है। मीडिया के बिना जीवन धीरे-धीरे असंभव होता जा रहा है। हमें देश में शायद ही कोई कोना या कोना मीडिया और उसके मलबे से मुक्त मिलेगा। मीडिया ने निश्चित रूप से संस्कृति पर अपना कठोर प्रभाव डाला है। हमारा देश अपनी समृद्ध संस्कृति के लिए बहुत मशहूर है, लेकिन संस्कृति को लेकर इस देश की जो स्थिति है और जो इसकी अव्यवस्था है, उस पर शायद ही हम गर्व महसूस कर सकें। वैश्वीकरण और पश्चिमीकरण के उद्भव के साथ, हमारी संस्कृति को एक बड़ा झटका लगा है और इससे हमारी प्रतिष्ठा और गौरव में भारी अस्थिरता आई है। संचार मीडिया एक समय था जब एक साधारण लैंडलाइन टेलीफोन बहुत बड़ी बात मानी जाती थी। फिर टेलीविजन का युग आया, समाचार एजेंसियों को एक चिंगारी मिली। कंप्यूटर के प्रवेश के साथ, हमने दुनिया को उलट-पुलट कर दिया है। इंटरनेट ने दुनिया को केवल एक क्लिक की दूरी पर सीमित करने के लिए प्रवेश की व्यापक गुंजाइश दी है। फेसबुक जैसी सोशल इंटरएक्टिव साइटों, ट्विटर जैसी ब्लॉगिंग साइटों ने बातचीत को बहुत आसान बना दिया है। स्काइप और वाइबर जैसी वीडियो कॉलिंग सुविधाओं के साथ, हर कोई एक-दूसरे के बहुत करीब पाता है और लोग आमने-सामने बातचीत करके काफी बेहतर महसूस करते हैं। समाचार चैनलों ने आम आदमी और सरकार के बीच के अंतर को कम कर दिया है जो लोकतांत्रिक व्यवस्था में सबसे महत्वपूर्ण है। मीडिया ने आम आदमी के दैनिक जीवन में अपनी गहरी जड़ें जमा ली हैं। मीडिया के प्रभाव के बिना लोग आज़ादी की हवा को शायद ही सूँघ सकते थे। भारतीय संस्कृति का महत्व भारत अपनी समृद्ध संस्कृति के लिए बहुत प्रसिद्ध है। हमारी सांस्कृतिक विरासत अपने आप में हमारी परंपराओं और रीति-रिवाजों का बहुत बड़ा प्रमाण है। भारत की एक विशेष विविधतापूर्ण संस्कृति है, जो विश्व में अद्वितीय है। हम अभी भी अपनी विविधतापूर्ण संस्कृति के साथ भारतीय होने की एकता, एकता को बनाए रखते हैं। हमारे यहां विभिन्न प्रकार की परंपराएं, भाषाविद्, रीति-रिवाज, जाति, पंथ आदि हैं। भारतीयों की नजर में हर संस्कृति समान रूप से अच्छी और महत्वपूर्ण है। हम भारतीयों का हृदय स्वागत योग्य है। हम हर परंपरा को समान दर्जा और सम्मान देने की पूरी कोशिश करते हैं। यही एक कारण है कि हमने पश्चिमीकरण का मार्ग प्रशस्त किया है। हमने पश्चिमी संस्कृति को अपना लिया है और उसमें अपना समावेश कर लिया है और यह तब तक अच्छा है जब तक हम अच्छे मूल्यों और प्रवृत्तियों का पालन करते हैं। लेकिन, कमी तब झलकती है जब पश्चिमीकरण को नकारात्मकता की ओर माना जाता है और बुरे गुणों और मूल्यों का बहुत अधिक पालन किया जाता है जो हमारी परंपराओं के बिल्कुल विपरीत है। भारतीय संस्कृति पर मीडिया का प्रभाव आइए भारतीय संस्कृति के उन विभिन्न क्षेत्रों पर चर्चा करें जिन पर मीडिया के कारण प्रभाव पड़ा है: x परिवार और विवाह मूल्य परिवार और विवाह ने अपना महत्व खो दिया है। युवा टेलीविजन और इंटरनेट की दुनिया में अधिक रुचि रखते हैं। वे पश्चिमी संस्कृति से अधिक प्रभावित हैं। इसने उस देश में लिव-इन रिलेशनशिप जैसे नए रिश्तों को प्रवेश दिया है जहां हम विवाह और संयुक्त परिवार संरचना को अत्यधिक महत्व देते हैं। यह वह समय है जब बहुसंख्यक एकल परिवार पसंद करते हैं। x व्यभिचार इंटरनेट की शुरुआत के साथ, अवांछित बकवास युवा दिमाग तक आसान पहुंच प्राप्त कर सकती है। इससे देश के कदमों को पाने के लिए एक बिजली की चिंगारी मिलती हैउनकी छवि और गौरव को क्षति पहुंची। देश में बढ़ती महिला सुरक्षा और संरक्षा की चिंता हमारी सभ्यता और परंपरा को हो रहे नुकसान का प्रमाण है। सांस्कृतिक विक्षोभ के कारण देश में भय का माहौल बढ़ गया है। यह निस्संदेह देश के सांस्कृतिक पतन का प्रमुख कारण है। x लोकतंत्र और शासन आम आदमी को सरकार से जोड़ने में मीडिया का बहुत अच्छा प्रभाव है। मीडिया ने निश्चित रूप से नागरिकों को सरकारी व्यवस्था के करीब बना दिया है जो लोकतंत्र के लिए बहुत महत्वपूर्ण है। सामाजिक मेलजोल और सामुदायिक संपर्क के संबंध में भारतीय संस्कृति मीडिया की मदद से अच्छी तरह विकसित हुई है। x मानव मूल्य फास्ट्रैक मीडिया के प्रकोप के साथ भारत में सामाजिक मूल्यों ने अपना मूल्य खो दिया है। मीडिया आम आदमी को सूचना उपलब्ध कराने से कहीं अधिक महत्वपूर्ण है। वे दिन गए जब लोग बड़ों का सम्मान करते थे, महिलाओं के प्रति सम्मानजनक छवि रखते थे, मानवता रखते थे। दुनिया बहुत तेजी से घूम गयी है और हालात उलट-पुलट हो गये हैं. चारों ओर हर कोई सिर्फ धन, संपत्ति और सत्ता का लालची है। वे अपनी सफलता की राह में आने वाले किसी भी चीज़ या किसी चीज़ की परवाह नहीं करते हैं। और सबसे महत्वपूर्ण बात यह है कि लोग ईमानदारी का रास्ता भूल गए हैं, वे अपने लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए सबसे छोटा रास्ता पसंद करते हैं। x जीवन शैली भारतीयों को फास्ट फूड और अंतरराष्ट्रीय व्यंजनों में अधिक रुचि है। उन्हें लगता है कि अंतरराष्ट्रीय खाद्य पदार्थ स्वादिष्टता के बजाय प्रतिष्ठा का प्रतीक हैं। कपड़ों ने अपना मूल्य खो दिया है। पुरुष केवल विदेशियों की नकल करने के लिए गर्मी के मौसम में सूट पहनना पसंद करते हैं। महिलाएं पश्चिमी संस्कृति के साथ बह गई हैं और भारतीय परिधानों ने अपना नैतिक और मूल्य खो दिया है। भारतीय महिलाओं के पहनावे में एक गरिमामय दृष्टिकोण होता है, जो आज शायद ही देखने को मिलता है। यहां तक कि पारंपरिक भारतीय परिधानों को भी पश्चिमी स्पर्श के साथ फिर से डिजाइन किया गया है। यहां तक कि मातृभाषा बोलना भी वर्तमान पीढ़ी द्वारा शर्मनाक कार्य माना जाता है। सिर्फ वयस्क ही नहीं, बल्कि बच्चे भी अंग्रेजी में बातचीत करते रहते हैं। बेहतर अंग्रेजी बोलने के लिए लोग अपने बच्चों को कॉन्वेंट में भेजना पसंद करते हैं। पढ़ने-लिखने की बात तो छोड़ ही दीजिए, बहुत से भारतीय तो अपनी मातृभाषा तक बोलना भी नहीं जानते। निष्कर्ष हम इस विषय को न्यूनतम शब्दों में समाप्त कर सकते हैं, लेकिन यह मुद्दा विशेष रूप से हमारे देश और संस्कृति की वैयक्तिकता के लिए बहुत चिंता का विषय है। हम भारतीयों के लिए संस्कृति की हानि किसी भी अन्य हानि से कहीं अधिक है। हम अपने नैतिक मूल्यों की हानि के साथ अंतर्राष्ट्रीय दृष्टिकोण पर अपना गौरव और सम्मान खो देंगे। ये सब मीडिया का सबसे बड़ा उपहार होगा. हालाँकि मीडिया ने हमें दुनिया को करीब लाने में कुछ सहूलियत दी है, फिर भी हमें तकनीक को अपने ऊपर निर्भर बनाना होगा और इसके विपरीत होने से बचना होगा। इसलिए, अब समय आ गया है कि हम स्थिति को समझें, समाज में अपने वास्तविक रुख को पहचानें और अपनी संस्कृति और अपने देश को पूर्ण विनाश से बचाने के लिए समझदारी से काम लें। ₹ पिछले का अगला ₹ अपनी टिप्पणी पोस्ट करें बहस आरईः मास मीडिया और सांस्कृतिक आक्रमण। -हेमंत शर्मा (08/10/14) भारत जैसे देश के लिए मास मीडिया एक उछाल है। आज भारत में जनसंचार माध्यमों का प्रभाव बढ़ रहा है। हर किसी को दृश्यता की आवश्यकता होती है और जनसंचार माध्यम इसके लिए एक बेहतरीन अवसर प्रदान करता है। इस प्रकार, ऐसे विज्ञापनदाताओं की संख्या बढ़ रही है जो प्रसिद्ध होने के लिए इन मीडिया चैनलों का भरपूर उपयोग कर रहे हैं। ग्रामीण और शहरी लोगों में एक बात समान है, वह है मीडिया। भारतीय चाहे किसी भी धर्म या जाति के हों, टीवी और रेडियो चैनलों से चिपके रहते हैं। लेकिन हमें टी चाहिए0 स्वयं से प्रश्न करें - क्या मीडिया संस्कृति हमारी अपनी संस्कृति को प्रभावित कर रही है? फिल्मों और सीरियल्स का शौक तो हर किसी को होता है लेकिन क्या आपने इन फिल्मों के बीच सबसे ज्यादा प्रमुखता रखने वाली ऐड फिल्मों पर ध्यान दिया है। कई प्रतिष्ठित ब्रांड खुद का विज्ञापन कर रहे हैं, लेकिन ऐसा लगता है कि यह व्यवहार या मूल्यों में किसी भी सामाजिक परिवर्तन को फिल्मों में चित्रित कुछ पात्रों की तरह मजबूती से नहीं लाता है। सामान्य लोगों के पहनावे और जीवनशैली में भारी बदलाव आया है। पप्पू 'बादशाह' में शाहरुख खान की तरह कपड़े पहनना चाहते हैं। मुन्नी आजा नचले में माधुरी की तरह डांस करना चाहती हैं। फिल्मों और टीवी धारावाहिकों से अवधारणाएं काफी प्रभावित हुई हैं। शुरुआती दौर में भारत में संचार और मनोरंजन अक्सर संगीतमय स्वर, कविता और धार्मिक ग्रंथों में देखा जाता था। हालाँकि, टेलीविजन की शुरुआत के साथ यह अंधेरे में गायब हो गया है। इसी तरह, लोक नृत्य और रंगमंच (रामलीला और नौटंकी) पर बॉलीवुड और टीवी धारावाहिकों ने कब्जा कर लिया है। लोक संगीत और नृत्य हमारी विविध संस्कृति का एक बहुत ही अभिन्न अंग हैं और ऐसा लगता है कि यह अब लुप्त हो गया है। प्रदर्शन कलाएँ विलुप्त होने के कगार पर हैं। जाति व्यवस्था के संबंध में सामाजिक संरचना में उल्लेखनीय परिवर्तन हुए हैं। जो लोग किसी भी प्रकार के मीडिया और संचार के मालिक हो सकते हैं, उन्हें उच्च श्रेणी की इकाई माना जाता है। कुछ लोगों के लिए यह वर्ग का दर्जा प्रतीक है। भारत की संस्कृति इतनी विशाल और विविध है कि इनमें से किसी एक को परिभाषित करना कठिन है। भारत ने ब्रिटिश राज से अपनी आजादी हासिल कर ली है और इस प्रकार वह संस्कृति के मूल्य को जानता है। इसका संरक्षण उनके लिए मायने रखता है. इस विविध संस्कृति की रक्षा के लिए हमारी सरकार द्वारा कई कदम उठाए गए हैं। लेकिन ऐसा लगता है कि जनसंचार माध्यमों के आगमन ने हमारी संस्कृति की रक्षा के लिए विकसित नीतियों में कुछ खामियाँ पैदा कर दी हैं। अपनी व्यापक पहुंच के कारण टेलीविजन ने भारतीय संस्कृति को सबसे अधिक अच्छे और बुरे दोनों तरीकों से प्रभावित किया है। मास मीडिया और संचार के विभिन्न विभिन्न चैनलों के आगमन के साथ, पदानुक्रम के शीर्ष पर बैठे ब्राह्मणों का स्थान उनके घरों में बड़ी रंगीन स्क्रीन वाले लोगों ने ले लिया है। जातिगत रेखाएं खत्म हो गई हैं लेकिन सूचना और प्रौद्योगिकी तक पहुंच हासिल करने की चाहत में लोगों के बीच एक व्यापक रेखा खींची गई है। लोग टेलीविजन की ओर आकर्षित हो रहे हैं और हर कोई अपने घर पर एक टीवी रखना चाहता है। इन विचारों ने पारंपरिक सामाजिक संरचना को पूरी तरह से नष्ट कर दिया है क्योंकि अधिक से अधिक लोग कुछ भौतिकवादी हासिल करने की उम्मीद में शहरों की ओर पलायन कर रहे हैं। गाँवों से शहरों की ओर होने वाले इन मात्र आंदोलनों के परिणामस्वरूप शहरों में बेरोजगारी के साथ-साथ मलिन बस्तियों की संख्या भी बढ़ रही है। यह महज़ एक कमी है क्योंकि मीडिया ने न केवल सामाजिक संरचना और मर्यादाओं को बदला है बल्कि भारतीय मर्यादाओं के विघटन का मुख्य कारण भी यही है। जनसंचार माध्यमों ने वास्तव में सीमाओं को लांघ दिया है। उनकी उचित मंजूरी के बिना एक सामान्य इंसान की गोपनीयता को खतरे में डाला जा रहा है। मीडिया सेलेब की निजता में सेंध लगाने को लेकर इतना जुनूनी हो गया है कि यह काफी आम हो गया है। हालाँकि, टेलीविजन और जनसंचार ने जनता को नवीनतम समाचारों, रुझानों और सूचनाओं से जोड़ने वाले एक पुल के रूप में काम किया है, लेकिन इसने सामाजिक और सांस्कृतिक संरचनाओं को भी विघटित कर दिया है। संचार और सूचना के नए तरीकों के आगमन के साथ कई पहलुओं का बलिदान दिया गया है। मीडिया और लोगों के बीच बातचीत हमारे देश की विविध संस्कृति को प्रभावित कर रही है।

सेवानिवृत्त प्रिंसिपल शैक्षिक स्तंभकार स्ट्रीट कौर चंद एमएचआर मलोट पंजाब

राय

नकली पौधे से असली हवा

विजय गर्ग

विश्व स्वास्थ्य संगठन (डब्ल्यूएचओ) ने खराब वायु गुणवत्ता को दुनियाभर में सार्वजनिक स्वास्थ्य के लिए सबसे बड़ा पर्यावरणीय खतरा बताया है। इलेक्ट्रॉनिक उपकरण के प्रयोग समेत अन्य कारणों से बाहर की तुलना में भवनों के अंदर की हवा अधिक खराब होती जा रही है। शहरों में लोगों का अधिकांश समय भी चहारदीवारी में ही बीत रहा है। जितना समय वे बाहर रहते भी हैं, उसमें हर वक्त स्वच्छ हवा नहीं मिलती है। अभी बंद परिसर में स्वच्छ हवा के लिए अलग-अलग एयर प्यूरीफायर का प्रयोग हो रहा है, लेकिन अमेरिका के बिंगहैमटन विश्वविद्यालय के वैज्ञानिकों ने इससे आगे बढ़कर हवा को स्वच्छ बनाने के लिए एक खास कृत्रिम पौधा तैयार किया है, जो कार्बन डाइऑक्साइड को अवशोषित कर ऑक्सीजन का उत्सर्जन करेगा।

कैसे निगलेगा कार्बन डाइआक्साइड लेजर कटिंग तकनीक का उपयोग कर 1.6 मिलीमीटर मोटी मिथाइल मेक्रिलेट से तैयार इस पौधे में पांच पत्तियां लगी हुई हैं। प्रत्येक पत्ती साइनोबैक्टीरिया संक्रमित एनोड, एक आयन एक्सचेंज झिल्ली और एक कैथोड से बने पांच बायो सोलर सेल से जुड़ी हुई है। इन सेल को सक्रिय रखने और वाष्पोत्सर्जन की क्रिया के लिए पौधे में हाइग्रोस्कोपिक लगाया गया है। इससे सजीव पौधों की तरह इसकी पत्तियों में भी पानी और पोषक तत्व पहुंचते रहते हैं। साइनोबैक्टीरिया पानी के साथ घर के अंदर के प्रकाश और कार्बन डाइऑक्साइड का उपयोग भी प्रकाश संश्लेषण में करता है।

कैसे मिलेगी ऑक्सीजन प्रकाश संश्लेषण के दौरान इलेक्ट्रॉन्स के साथ उत्पादित प्रोटॉन को आयन एक्सचेंज झिल्ली के माध्यम से कैथोड में ले जाया जाता है। वे कैथोडिक प्रतिक्रिया को पूरा करने के लिए वायुमंडलीय आक्सीजन के साथ प्रतिक्रिया करते हैं। यह महत्वपूर्ण प्रक्रिया प्रणाली की इलेक्ट्रोन्यूट्रलिटी को बनाए रखने के लिए आवश्यक है। फोन भी होगा चार्ज यह कृत्रिम पौधा हवा के साथ बिजली का भी उत्पादन करेगा, जो इसकी उपयोगिता को अधिक बेहतर बनाता है। यह लगभग 140 माइक्रोवाट बिजली का उत्पादन करेगा। वैज्ञानिक इससे न्यूनतम एक मिलीवाट से अधिक बिजली उत्पादन के लिए तकनीकी उन्नयन पर काम कर रहे हैं। एक बायो सोलर सेल 25 वोल्ट का ओपन सर्किट वोल्टेज और 9 माइक्रोवाट वर्ग सेंटीमीटर का अधिकतम ऊर्जा घनत्व प्राप्त करता है। प्रत्येक पत्ते के भीतर श्रृंखला में पांच बायो सोलर से जोड़कर 46 माइक्रोवाट तक बिजली का उत्पादन किया जा सकता है। इस तरह अधिकतम 420 माइक्रोवाट बिजली का उत्पादन संभव है। असली पौधों की तरह सिंचाई लगातार बेहतर ढंग से सक्रिय रहने के लिए इस पौधे को खाद-पानी भी देना होगा। पौधा इससे ही ऊर्जा प्राप्त करेगा। ऐसे में यह आपको असली पौधे का भी अहसास देगा। हालांकि इसके रखरखाव की प्रक्रिया को आसान बनाने और लंबी अवधि तक सक्रिय बने रहने के लिए वैज्ञानिक इसमें अलग-अलग तरह के बैक्टीरिया के उपयोग पर काम कर रहे हैं।

सेवानिवृत्त प्रिंसिपल शैक्षिक स्तंभकार स्ट्रीट कौर चंद एमएचआर मलोट पंजाब

मल्टीमीडिया सामग्री निर्माण के लिए गहन कृत्रिम बुद्धिमत्ता पर शीर्ष उपकरण

विजय गर्ग

डीपएआई एक ऐसा मंच है जो मल्टीमीडिया सामग्री निर्माण में रचनात्मकता और दक्षता बढ़ाने के लिए कृत्रिम बुद्धिमत्ता का उपयोग करता है। डीपएआई कई उपकरण प्रदान करता है जो छवि पहचान, प्राकृतिक भाषा प्रसंस्करण और डेटा विश्लेषण का उपयोग करते हैं। 2024 में मल्टीमीडिया सामग्री निर्माण के लिए डीपएआई पर उपलब्ध कुछ शीर्ष उपकरण यहां दिए गए हैं: 1. एआई वीडियो जेनरेटर एआई वीडियो जेनरेटर डीपएआई के असाधारण उपकरणों में से एक है, जो उपयोगकर्ताओं को स्थिर छवियों और टेक्स्ट को मनोरम वीडियो एनिमेशन में बदलने की अनुमति देता है। यह टूल सुचारु बदलाव और गतिशील दृश्य बनाने के लिए उन्नत एल्गोरिदम का उपयोग करता है, जो इसे प्रचार वीडियो और सोशल मीडिया पोस्ट बनाने के लिए आदर्श बनाता है। उपयोगकर्ता अपने वांछित टेक्स्ट और छवियों को इनपुट कर सकते हैं, और एआई बाकी काम संभालता है, मिनटों में पेशेवर-गुणवत्ता वाले वीडियो तैयार करता है। 2. एआई इमेज जेनरेटर डीपएआई का एआई इमेज जेनरेटर पाठ्य संकेतों से अद्वितीय छवियां बनाने के लिए एकदम सही है। यह टूल विभिन्न कला शैलियाँ प्रदान करता है, जो उपयोगकर्ताओं को ऐसी छवियां उत्पन्न करने में सक्षम बनाता है जो उनकी विशिष्ट आवश्यकताओं से मेल खाती हैं, चाहे विपणन सामग्री, ब्लॉग पोस्ट या रचनात्मक परियोजनाओं के लिए। एआई इमेज जेनरेटर यथार्थवादी चित्रों से लेकर अमूर्त कला तक कुछ भी तैयार कर सकता है, जो दृश्य सामग्री निर्माण के लिए अनंत संभावनाएं प्रदान करता है। 3. एआई छवि संपादक एआई इमेज एडिटर को छवियों को संशोधित करने की प्रक्रिया को सरल बनाने के लिए डिज़ाइन किया गया है। उपयोगकर्ता त्वरित समायोजन करने के लिए सरल संकेत दर्ज कर सकते हैं, जैसे रंग बदलना, तत्व जोड़ना, या पृष्ठभूमि हटाना। यह उपकरण उन्नत फोटो संपादन कौशल की आवश्यकता के बिना परिष्कृत दृश्य बनाने के लिए विशेष रूप से उपयोगी है। एआई इमेज एडिटर यह सुनिश्चित करता है कि आपकी छवियां पेशेवर दिखें और आपकी विशिष्ट आवश्यकताओं को पूरा करें। 4. एआई म्यूजिक जेनरेटर ऑडियो सामग्री निर्माण में शामिल लोगों के लिए, एआई म्यूजिक जेनरेटर एक गेम-चेंजर है। यह टूल उपयोगकर्ताओं को अपनी वांछित शैली, मनोदशा और गति इनपुट करके मूल संगीत ट्रैक बनाने की अनुमति देता है। एआई फिर संगीत का एक अनूठा टुकड़ा तैयार करता है जिसका उपयोग वीडियो, पॉडकास्ट, गेम और बहुत कुछ के लिए किया जा सकता है। एआई म्यूजिक जेनरेटर विभिन्न शैलियों का समर्थन करता है, जो इसे विभिन्न प्रकार की परियोजनाओं के लिए बहुमुखी बनाता है। 5. एआई अक्षर डीपएआई का एआई कैरेक्टर टूल उपयोगकर्ताओं को मशहूर हस्तियों, सुपरहीरो और अन्य काल्पनिक पात्रों के एआई प्रतिनिधित्व के साथ बातचीत में शामिल होने में सक्षम बनाता है। इस टूल का उपयोग इंटरैक्टिव सामग्री बनाने के लिए किया जा सकता है, जैसे वेबसाइटों के लिए चैटबॉट या आकर्षक सोशल मीडिया पोस्ट। एआई कैरेक्टर टूल सामग्री निर्माण में एक मजेदार और इंटरैक्टिव तत्व जोड़ता है, जिससे दर्शकों के साथ जुड़ना आसान हो जाता है। 6. बैकग्राउंड रिमूवर बैकग्राउंड रिमूवर टूल उन लोगों के लिए आवश्यक है जिन्हें अपनी पृष्ठभूमि से विषयों को शीघ्रता से अलग करने की आवश्यकता है। यह टूल छवियों से पृष्ठभूमि का सटीक रूप से पता लगाने और हटाने के लिए एआई का उपयोग करता है, जिससे उपयोगकर्ता स्वच्छ और पेशेवर दृश्य बना सकते हैं। चाहे आप किसी ऑनलाइन स्टोर के लिए उत्पाद की तस्वीरें तैयार कर रहे हों या किसी प्रेजेंटेशन के लिए ग्राफिक्स बना रहे हों, बैकग्राउंड रिमूवर आपका समय और मेहनत बचा सकता है। 7. कलराइज़र कलराइज़र टूल श्वेत-श्याम तस्वीरों को जीवंत बनाने के लिए एकदम सही है। एआई का उपयोग करते हुए, यह टूल मोनोक्रोम छवियों में यथार्थवादी रंग जोड़ता है, जिससे उनकी दृश्य अपील बढ़ जाती है। Colorizer ऐतिहासिक फोटो बहाली, रचनात्मक परियोजनाओं और पुरानी पारिवारिक तस्वीरों को बढ़ाने के लिए आदर्श है। यह आपकी छवियों में एक नया आयाम जोड़ने का एक आसान तरीका प्रदान करता है। 8. सुपर रेजोल्यूशन सुपर रेजोल्यूशन टूल उपयोगकर्ताओं को अपनी छवियों की गुणवत्ता बढ़ाकर उन्हें बेहतर बनाने की अनुमति देता हैसंकल्प। यह टूल विवरण जोड़ने और कम-रिज़ॉल्यूशन वाली छवियों की स्पष्टता में सुधार करने के लिए एआई का उपयोग करता है, जिससे वे मुद्रण या उच्च-गुणवत्ता वाले डिजिटल डिस्प्ले के लिए उपयुक्त हो जाते हैं। सुपर रेजोल्यूशन विशेष रूप से फोटोग्राफरों, डिजाइनरों और ऐसे किसी भी व्यक्ति के लिए उपयोगी है, जिन्हें गुणवत्ता खोए बिना छवियों को बेहतर बनाने की आवश्यकता होती है। 9. फसल काटना अनक्रॉप टूल को किसी छवि के किनारों को विस्तारित करने, उसे प्रभावी ढंग से ₹अनक्रॉपर करने के लिए डिज़ाइन किया गया है। यह टूल नई सामग्री तैयार करने के लिए AI का उपयोग करता है जो मौजूदा छवि के साथ सहजता से मिश्रित हो जाती है, जिससे उपयोगकर्ता पहलू अनुपात को बदल सकते हैं या अपने दृश्यों में अधिक संदर्भ जोड़ सकते हैं। अनक्रॉप बैनर, सोशल मीडिया पोस्ट और अन्य सामग्री बनाने के लिए उपयोगी है जिसके लिए विशिष्ट आयामों की आवश्यकता होती है। 10. टेक्स्ट टू स्पीच टेक्स्ट टू स्पीच टूल लिखित पाठ को प्राकृतिक-ध्वनि वाले भाषण में परिवर्तित करता है। यह टूल कई भाषाओं और आवाज़ों को सपोर्ट करता है। यह वीडियो, ऑडियोबुक और अन्य ऑडियो सामग्री के लिए वॉयस ओवर बनाने के लिए भी एक आदर्श उपकरण है। टेक्स्ट टू स्पीच टूल पहुंच को बढ़ाता है और आपकी परियोजनाओं में कथन जोड़ने का एक सुविधाजनक तरीका प्रदान करता है। वीडियो और चित्र बनाने से लेकर फ़ोटो संपादित करने और संगीत बनाने तक, ये उपकरण रचनात्मक प्रक्रिया को सरल बनाने और बढ़ाने के लिए एआई की शक्ति का उपयोग करते हैं। चाहे आप एक पेशेवर सामग्री निर्माता हों या अपनी सामग्री को बढ़ाने के लिए एआई टूल की तलाश कर रहे हों, डीपएआई के उपकरण आपको आसानी से उच्च गुणवत्ता वाली सामग्री तैयार करने में मदद कर सकते हैं।

एनसीसी रोजगार के साथ-साथ अनुशासन भी पैदा करती है

विजय गर्ग

एनसीसी एक ऐसा मंच है, जो छात्रों को पढ़ाई के साथ-साथ देश के प्रति जिम्मेदार बनने के लिए प्रेरित करता है। देश के शिक्षण संस्थानों में जो छात्र राष्ट्रीय सेवा या सशस्त्र बलों में अपना भविष्य देखते हैं, वे स्कूल और कॉलेज स्तर पर एनसीसी प्लेटफॉर्म को अपनाते हैं। भारतीय सेना का एक महत्वपूर्ण अंग एनसीसी विंग भारतीय सेना का एक महत्वपूर्ण हिस्सा है, जिसमें छात्रों को पढ़ाई के साथ-साथ करियर के लिए भी प्रेरित किया जाता है। भारतीय सेना में युवाओं को प्रेरित करेंएनसीसी की स्थापना की गई थी एनसीसी की तीन शाखाएं थल सेना, वायु और नौसेना विंग हैं। इसका उद्देश्य छात्रों को अनुशासित और देशभक्त नागरिक के रूप में तैयार करना है। इसका मुख्य कार्यालय दिल्ली में है और इसके क्षेत्रीय कार्यालय भारत के विभिन्न राज्यों में हैं। वर्ष 1948 से इस संगठन ने राष्ट्र निर्माण में बड़ा योगदान दिया है। विद्यार्थी जीवन में इसका बहुत महत्व है। देश के प्रति जिम्मेदार बनाता है एनसीसी छात्रों में पढ़ाई के साथ-साथ अनुशासन और देश के प्रति जिम्मेदारी भी पैदा करता है। काइस योजना के तहत छात्र स्कूल स्तर पर दो वर्षीय पाठ्यक्रम और कॉलेज स्तर पर तीन वर्षीय पाठ्यक्रम में शामिल हो सकते हैं। इस दौरान जहां छात्र अपना शैक्षणिक कोर्स करता है, वहीं वह एनसीसी के तहत एक विशेष जीवन परीक्षण सीखकर देश में सशस्त्र बलों में शामिल होने का रास्ता भी खोलता है। देशभर में कई स्कूल और कॉलेज एनसीसी के तहत छात्रों को तैयारी कराते हैं लेकिन यहां मुद्दा यह है कि कॉलेजों और स्कूलों में छात्र तो बहुत हैं लेकिन सीटें सीमित हैं। इसलिए बहुत कम विद्यार्थियों को एनसीसी मिल पाती हैहै इस समस्या के समाधान के लिए केंद्र सरकार ने नई शिक्षा नीति 2020 के तहत एनसीसी को वैकल्पिक विषय के रूप में शुरू करने का कदम उठाया है। इससे कई छात्र लाभान्वित हो सकते हैं. रोजगार के अवसर शैक्षणिक संस्थानों में एनसीसी को वैकल्पिक विषय के रूप में शामिल करने के फैसले से देश के कैडेटों को बहुत फायदा होगा। राष्ट्रीय स्तर पर छात्र इसे एक विषय के रूप में तीन साल तक पढ़ेंगे तो भविष्य में रोजगार के अवसर बढ़ेंगे। सीमावर्ती इलाकों के कैडेट्स को काफी फायदा होगा. विषय के पाठ्यक्रम के अनुसार कैडेट्स नंखासकर बी और सी सर्टिफिकेट परीक्षा पास करने में काफी फायदा होगा, जो 2 से 5 साल की निर्धारित प्रशिक्षण अवधि के बाद दी जाती है। शिक्षा क्षेत्र में इसकी शुरुआत एक वैकल्पिक विषय के रूप में हुई है। इस योजना के लिए राज्य सरकारों द्वारा सकारात्मक पहल की जा रही है और इस कदम को सही दिशा में एक दूरदर्शी भविष्य के रूप में देखा जा रहा है। राष्ट्रीय शिक्षा 2020 के तहत, छात्र केवल संस्थानों द्वारा पेश किए गए इस प्लेटफॉर्म तक सीमित रहने के बजाय अपना विषय चुन सकते हैं। इसका उद्देश्य प्रशिक्षण को और अधिक संपूर्ण बनाना हैएक पेशा बनाने के लिए. इस क्षेत्र में रोजगार के अवसरों को सुविधाजनक बनाना। वैकल्पिक विषय के रूप में पढ़कर शिक्षा प्राप्त की जाएगी अपनी पढ़ाई के साथ-साथ वैकल्पिक विषय के रूप में एनसीसी की पढ़ाई करने से एक ओर जहां छात्र एनसीसी के बारे में पूरी तरह से शिक्षित हो जाएगा, वहीं दूसरी ओर इस पाठ्यक्रम के दौरान उसे अनुशासन के बारे में भी अच्छी तरह से पता चल जाएगा। एनसीसी एक ऐसा विषय है, जिसमें शारीरिक रूप से फिट रहने वाला छात्र देश की सुरक्षा व्यवस्था के बारे में अच्छे से जानकर इस कोर्स में अपना भविष्य बना सकता है। भारत एक ऐसा देश हैजिसकी सीमा कई देशों से लगती है और एक विकासशील देश होने के बावजूद इसके पड़ोसी देशों के साथ संबंध बहुत अच्छे नहीं हैं। इसलिए छात्रों को देश की सशस्त्र सेनाओं में रोजगार के अवसर तभी मिल सकते हैं जब उन्हें शिक्षा के रूप में ऐसा प्रशिक्षण दिया जा सके। विद्यार्थियों में चेतना जागृत करने में सहायता करें एनसीसी दुनिया का सबसे बड़ा वर्दीधारी संगठन है, जिसमें वर्तमान में सेना, वायु सेना और नौसेना

विंग के तहत लगभग 1.4 लाख कैडेट हैं। इस मंच का उपयोग युवाओं में देशभक्ति और नेतृत्व की भावना पैदा करने के लिए किया जाता हैमदद करता है एनसीसी को और अधिक आकर्षक बनाने के लिए सरकार लगातार काम कर रही है। ढेर सारी नई तकनीक और अत्याधुनिक उपकरणों के साथ भारतीय सेना दुनिया की महत्वपूर्ण सेनाओं में अपनी जगह बनाने में सफल रही है। इस समय हर देश अपनी सेनाओं की बेहतरी के लिए काम कर रहा है। दुनिया में बहुत ताकतवर देश हैं, जिनकी सेनाएं आधुनिक तकनीक से भरपूर हैं। ऐसे में भारत जैसे विकासशील देश के लिए दुनिया में चल रही घटनाओं से अवगत होकर अपने देश की सेनाओं की बेहतरी के लिए काम करना एक चुनौती बन जाता है।. देश के युवाओं में सेना के प्रति जागरूकता और रुचि बढ़ी है, इसलिए स्कूल स्तर से एनसीसी कार्यक्रमों के माध्यम से छात्रों में ऐसी जागरूकता जागृत की जाती है, ताकि वे भविष्य में अच्छे सैनिक बनकर देश की सेवा कर सकें।

जब रतन टाटा जैसी शर्ट खरीदने के लिए शांतनु ने खर्च कर दी थी अपनी आधी सैलरी

परिवहन विशेष न्यूज

31 साल के शांतनु नायडू रतन टाटा के काफी करीब समझे जाते थे। उन्हें खुद रतन टाटा ने अपने साथ काम करने का ऑफर दिया था। शांतनु का कहना है कि एक बार उन्होंने रतन टाटा के फेवरिट ब्रांड की शर्ट खरीदने के लिए महीने की आधी सैलरी खर्च कर दी थी। आइए जानते हैं कि पूरा मामला क्या था।

नई दिल्ली। देशभर में न जाने कितने युवा और अनुभवी उद्योगपति तरसते रहे होंगे कि उन्हें रतन टाटा से कोई कारोबारी सलाह मिल जाए। लेकिन, एक नौजवान भी है, जो निवेश से जिंदगी तक के तमाम मसलों पर दिवंगत रतन टाटा को मशविरा देता था। उस शख्स का नाम है, शांतनु नायडू(

शांतनु नायडू टाटा के सबसे करीबी लोगों में गिने जाते हैं। उन्होंने रतन टाटा जैसी शर्ट पहनने के लिए अंतिम महीने की आधी सैलरी खर्च करनी पड़ गई थी। शांतनु ने साल 2021 में अपने संस्मरण में रतन टाटा से मुलाकात और शर्ट समेत कई किस्से साझा किए थे।

क्या था पूरा मामला

शांतनु बताते हैं कि वह कॉर्नेल यूनिवर्सिटी में पढ़ाई के लिए जाने वाले थे। उन्होंने रतन टाटा से मिलने का अनुरोध किया। रतन टाटा ने भी उनके अनुरोध को टाला नहीं और उन्हें डिनर के लिए बुलाया। शांतनु इस खास मुलाकात के लिए ब्रूक्स ब्रदर्स (Brooks Brothers) ब्रांड की शर्ट पहनकर पहुंचे थे।

ब्रूक्स ब्रदर्स को रतन टाटा का सबसे फेवरिट ब्रांड कहा जाता है। इस 200 साल पुरानी मेन्स वियर कंपनी ने 40 अमेरिकी प्रेसिडेंट के लिए भी कपड़े तैयार किए। नायडू ने बताया है कि जब उन्होंने टाटा को ब्रूक्स ब्रदर्स की शर्ट पहने देखा था, तो उन्होंने भी इस ब्रांड की एक शर्ट खरीदी थी। उन्हें शर्ट खरीदने के लिए 'अंतिम महीने की आधी सैलरी खर्च करनी पड़ गई थी।'

जब शर्ट के पैसे देने के लिए हुई बहस

जब शांतनु अमेरिका में पढ़ाई कर रहे थे, तब भी उनकी रतन टाटा से मुलाकात होती रहती थी। रतन टाटा को जब पता लगा कि एक कील की वजह से शांतनु की कीमती ब्रूक्स ब्रदर्स की शर्ट फट गई है, तो उन्होंने वैसी ही शर्ट खोजी तलाश। दोनों के बीच इस बात पर बहस हो गई कि शर्ट के पैसे कौन देगा। रतन टाटा ने आखिर में जवाब दिया, 'क्या मैं अपने दोस्त के लिए शर्ट भी नहीं खरीद सकता?'

कौन हैं शांतनु नायडू

शांतनु नायडू काफी वक्त तक रतन टाटा के असिस्टेंट रहे। 31 साल के शांतनु का टाटा परिवार से कोई नाता नहीं। लेकिन, सबसे दिलचस्प बात यह है कि खुद रतन टाटा ने फोन करके शांतुन को अपने साथ काम करने का न्योता दिया। रतन टाटा के शांतनु के शब्द थे, 'आप जो काम करते हैं, मैं उससे काफी प्रभावित हूं। क्या आप मेरा असिस्टेंट बनना चाहेंगे।'

क्या काम करते थे शांतनु

शांतनु पशुप्रेमी हैं। उन्होंने आवारा कुत्तों के लिए एक रिफ्लेक्टर बनाया था, डॉग कॉलर। इसका मकसद था आवारा कुत्तों को सड़क दुर्घटनाओं से बचाना। दरअसल, आवारा कुत्ते कई बार सड़क हादसों का शिकार हो जाते थे, क्योंकि ड्राइवर उन्हें देख नहीं पाते थे। शांतनु का बनाया डॉग कॉलर कुत्तों के गले में चमकता और ड्राइवर उन्हें देखकर रफ्तार धीमी कर देते। इससे सैकड़ों कुत्तों की जान बची।

शांतनु ने डॉग कॉलर कैसे बनाया

शांतनु के पास डॉग कॉलर बनाने के लिए पर्याप्त पैसे नहीं थे। लिहाजा, उन्होंने कॉलर बनाने के लिए बेस मैटेरियल के रूप में डेनिम पैंट का इस्तेमाल करने का फैसला किया। उन्होंने घर-घर जाकर पुराने डेनिम पैंट जुटाए। उन्होंने पुणे में 500 रिफ्लेक्टिव कॉलर बनाकर कुत्तों पहनाया। इन कॉलर की वजह से स्ट्रीट डॉग को रात में बिना स्ट्रीट लाइट के भी ड्राइवर्स दूर से ही देख सकते थे। शांतनु के काम को काफी सराहा गया।

रतन टाटा से कैसे मिले शांतनु

शांतनु ने अपने डॉग कॉलर के बारे में एक फेसबुक पोस्ट में लिखा। मीडिया में भी उनके काम की रिपोर्ट हुई। शांतनु का काम रतन टाटा तक भी पहुंचा और वे शांतनु से काफी प्रभावित हुए। रतन टाटा भी पशप्रेमी हैं और उन्हें खासतौर पर कुत्तों से काफी लगाव है। उन्होंने शांतनु को खुद फोन करके बुलाया और अपना असिस्टेंट बनने का ऑफर दिया।

रतन टाटा के लिए क्या करते थे शांतनु

शांतनु की लिंक्डइन प्रोफाइल बताती है कि वह जून 2017 से टाटा ट्रस्ट में काम कर रहे हैं। उन्होंने टाटा एलेक्सी में डिजाइन इंजीनियर के तौर पर भी काम किया है। वह टाटा ट्रस्ट के उप महाप्रबंधक भी हैं। कॉर्नेल यूनिवर्सिटी से एमबीए करने वाले शांतनु टाटा ग्रुप में काम करने वाली अपने परिवार की पांचवीं पीढ़ी हैं। वह रतन टाटा को स्टार्टअप में निवेश करने जैसे मसलों पर भी सलाह देते थे।

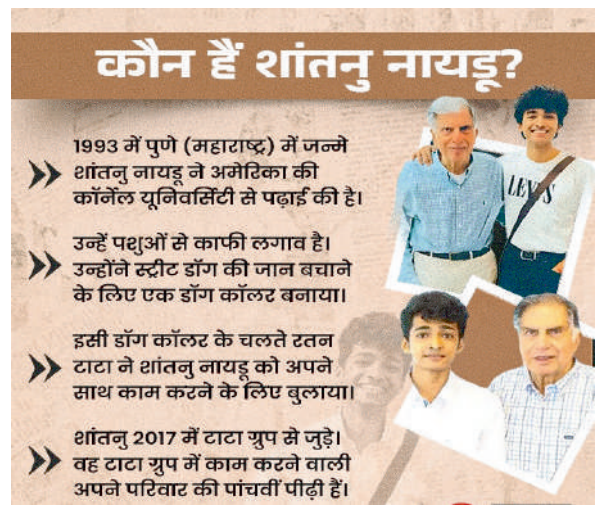

दिवाली से पहले बढ़ेगा खाद्य तेलों का दाम? घटते आयात से बढ़ी चिंता

केंद्र सरकार ने पिछले महीने खाद्य तेलों के आयात शुल्क में भारी इजाफा किया था। इसका मकसद घरेलू उद्योग और किसानों का फायदा पहुंचाना था। आयात शुल्क बढ़ने के बाद पिछले महीने यानी सितंबर में खाद्य तेलों के आयात में भारी कमी आई है। एसईए ने आयात में गिरावट का कारण जुलाई-अगस्त के दौरान अधिक आयात और कमजोर मांग को बताया है।

नई दिल्ली। कच्चे और रिफाइंड पाम तेल का आयात घटने के कारण सितंबर में कुल खाद्य तेल आयात में 29 प्रतिशत की गिरावट रही है। उद्योग संगठन साल्वेंट एक्सट्रैक्टर्स एसोसिएशन (एसईए) की ओर से शुक्रवार को जारी डेटा के अनुसार, पिछले महीने कुल खाद्य तेल आयात 10,64,499 टन रहा है जो पिछले वर्ष समान अवधि में 14,94,086 टन रहा था।

एसईए के डेटा के मुताबिक, सितंबर में गैर-खाद्य तेल आयात 22,990 टन रहा है जो पिछले वर्ष समान महीने में 57,940 टन था। पिछले महीने वनस्पति तेल आयात 10,87,489 टन रहा है। यह पिछले वर्ष की समान अवधि के 15,52,026 टन के मुकाबले 30 प्रतिशत कम है।

खाद्य तेल श्रेणी में पिछले महीने कच्चे पाम तेल का आयात घटकर 4,32,510 टन रहा है। यह पिछले साल समान महीने में 7,05,643 टन था। इसी प्रकार, रिफाइंड पाम तेल का आयात घटकर 84,279 टन रहा है जो सितंबर 2023 में 1,28,954 टन था। कच्चे सूरजमुखी तेल का आयात घटकर 1,52,803 टन रहा है जो पिछले वर्ष सितंबर में 3,00,732 टन था।

एसईए ने इस गिरावट का कारण जुलाई-अगस्त के दौरान अधिक आयात और कमजोर मांग को बताया है। इसके कारण बंदरगाहों पर स्टॉक बढ़ गया है। इसके अलावा, आयातक कीमतों में अस्थिरता के कारण भी सतर्कता बरत रहे हैं। अक्टूबर में समाप्त होने जा रहे चालू विपणन वर्ष के पहले 11 महीनों में कुल वनस्पति तेल आयात छह प्रतिशत घटकर 1,47,75,000 टन रहा है जो पिछले वर्ष समान अवधि में 1,56,73,102 टन था।

सितंबर में बढ़ा था आयात शुल्क

केंद्र सरकार ने पिछले महीने कच्चे पाम तेल और रिफाइंड सूरजमुखी तेल के आयात पर शुल्क को बढ़ाकर क्रमशः 20 और 32.5 प्रतिशत कर दिया था। कच्चे पाम तेल, सोयाबीन और सूरजमुखी तेल पर मूल सीमा शुल्क को शून्य से बढ़ाकर 20 प्रतिशत किया गया था। इसी तरह, रिफाइंड पाम, सोयाबीन और सूरजमुखी तेल पर सीमा शुल्क को 12.5 फीसदी से बढ़ाकर 32.5 प्रतिशत किया गया था। इस इजाफे के बाद प्रभावी आयात शुल्क क्रमशः 27.5 फीसदी और 35.75 फीसदी हो जाएगा।

इंपोर्ट ड्यूटी बढ़ने की वजह से फेस्टिव सीजन की शुरुआत से पहले खाद्य तेलों की कीमतों में बड़ा उछाल भी आया था। इस पर सरकार ने नाराजगी भी जताई थी।

बिल्डरों की मनमानी से घर खरीदार परेशानी, बिल्डर-बायर एग्रीमेंट में मांगा एग्जिट क्लॉज

घर खरीदारों ने केंद्र सरकार को लिखी चिट्ठी में बिल्डरों पर मनमानी का आरोप लगाया है। उनका कहना है कि बिल्डरों की आर्थिक दशा खराब हो जाए तो उनके पास एनसीएलटी जैसे प्लेटफार्म पर जाने का अधिकार है लेकिन खरीदार के पास अपना पैसा बचाने का कोई जरिया नहीं है। अगर किसी मुसीबत के चलते घर खरीदारों को फ्लैट कैंसल करना पड़ता है तो उन्हें आर्थिक क्षति न उठानी पड़े।

नई दिल्ली। रेरा की केंद्रीय सलाहकार परिषद के एक सदस्य अभय उपाध्याय ने आवासन और शहरी कार्य मंत्रालय से घर खरीदारों को बिल्डरों की मनमानी से बचाने के लिए बिल्डर-बायर एग्रीमेंट में अनिवार्य रूप से एग्जिट क्लॉज का प्रविधान करने की मांग की है। उपाध्याय घर खरीदारों के सबसे बड़े संगठन फोरम फार पीपल्स कलेक्टिव एफर्ट (एफपीसीए) के अध्यक्ष भी हैं।

उन्होंने मंत्रालय से कहा है कि रेरा अधिकारियों को यह निर्देश दिया जाए कि वे बिल्डर-बायर एग्रीमेंट में इस उपबंध को शामिल कराएं। रियल इस्टेट नियामक कानून यानी रेरा में सुधार-संशोधन की चर्चाओं के बीच उपाध्याय ने आवासन और शहरी कार्य मंत्रालय को पत्र लिखकर उन लोगों की समस्याओं का मामला उठाया है, जो वित्तीय स्थिति खराब हो जाने के कारण खर खरीदने का अपना सपना बीच में ही छोड़ देने के लिए विवश हो जाते हैं।

उपाध्याय के अनुसार यह आश्चचर्यजनक है कि बिल्डर-बायर एग्रीमेंट में उपभोक्ताओं के लिए अनुबंध से बाहर निकलने की कोई व्यवस्था ही नहीं है। इसके चलते वे बिल्डरों की मनमानी का शिकार हो रहे हैं। उन्होंने एक ऐसे मामले का उदाहरण भी दिया जिसमें बायर को फ्लैट कैंसल करने पर जमा राशि का 75 प्रतिशत हिस्सा गंवाना पड़ा।

केंद्र सरकार को लिखी चिट्ठी में उपाध्याय ने कहा है कि बिल्डरों की आर्थिक दशा खराब हो जाए तो उनके पास एनसीएलटी जैसे प्लेटफार्म पर जाने का अधिकार है, लेकिन खरीदार के पास अपना पैसा बचाने का कोई जरिया नहीं है। उसे यह सुविधा मिलनी चाहिए कि अगर वह नौकरी गंवाने या किसी अन्य मुसीबत के चलते उसे फ्लैट कैंसल करना पड़ता है तो उसे आर्थिक क्षति न उठानी पड़े।

रेरा में यह कहा गया है कि अगर डेवलपर अगर अपनी गलती के कारण फ्लैट का कब्जा न दे सके तो उसे उपभोक्ता को हर्जाने के साथ पैसा वापस करना चाहिए, लेकिन ऐसी भी स्थिति हो सकती है कि उपभोक्ता को अपना फ्लैट कैंसल करना पड़े। यह प्राकृतिक न्याय के खिलाफ है कि अगर कोई व्यक्ति फ्लैट बुक करता है तो उसे हर हाल में किस्तें देनी पड़ें।

एफपीसीए ने सुझाव दिया है कि अगर तीन महीने में फ्लैट आवंटी की ओर से कैंसल कर दिया जाता है तो उसे 15 दिनों के भीतर पूरा पैसा वापस किया जाए। अगर यह काम तीन महीने के बाद किया जाता है तो डेवलपर जमा पैसे पर बैंक ब्याज दर के अनुसार कटौती करके एक माह के अंदर भुगतान कर दे।

ह्युंडई आईपीओ में पैसे लगाएं या नहीं, मारुति और टाटा मोटर्स के मुकाबले कितना सही है वैल्यूएशन?

हुंडई मोटर इंडिया जल्द ही 27870 करोड़ रुपये जुटाने के लिए आईपीओ लाएगी। यह सब्सक्राइब के लिए 15 अक्टूबर से खुलेगा। यह भारत का सबसे बड़ा आईपीओ होगा। हुंडई मोटर इंडिया का प्रस्तावित आईपीओ पूरी तरह से ऑफर फॉर सेल (OFS) है। इसका मतलब है कि आईपीओ का पूरा पैसा पैरेंट कंपनी हुंडई को जाएगा।

नई दिल्ली। हुंडई मोटर इंडिया लिमिटेड (HMIL) का आईपीओ 15 अक्टूबर से सब्सक्रिप्शन के लिए खुलेगा। यह आईपीओ पूरी तरह से ऑफर फॉर सेल (OFS) है और इससे मिलने वाला पैसा HMIL की पैरेंट कंपनी और दक्षिण कोरियाई ऑटोमेकर हुंडई (Hyundai) को जाएगा। आइए जानते हैं कि इस आईपीओ में पैसे लगाने चाहिए या नहीं।

कितना होगा प्राइस बैंड

हुंडई के आईपीओ का प्राइस बैंड 1,865-1,960 रुपये प्रति शेयर है। यह भारत का सबसे बड़ा आईपीओ होगा, जो एलआईसी के 21,000 करोड़ रुपये के आईपीओ को पीछे छोड़ देगा। रिटेल इन्वेस्टर्स 15 अक्टूबर से 17 अक्टूबर तक आईपीओ में पैसे लगा सकेंगे। अलॉटमेंट 18 अक्टूबर को होगा। हुंडई की BSE और NSE पर एंट्री 22 अक्टूबर को होगी। इश्यू का रजिस्ट्रार केफिन टेक है।

ब्रोकरेज फर्म की राय

ब्रोकरेज का मानना है कि हुंडई के मार्केट शेयर और ग्रोथ को देखते हुए उसका आईपीओ सब्सक्राइब करने लायक है। LPK सिक्योरिटीज ने हुंडई के आईपीओ को सब्सक्राइब रेटिंग दी है। ब्रोकरेज फर्म का कहना है कि हुंडई मोटर इंडिया लिमिटेड (HMI) घरेलू बाजारों में पैसेंजर व्हीकल सेगमेंट दूसरी सबसे बड़ी प्लेयर है।

हुंडई लगभग तीन दशकों से भारतीय बाजारों में है और उद्योग के उतार-चढ़ाव से गुजरा है। HMI भारत में एक अच्छी तरह से स्थापित खिलाड़ी है, जिसकी ग्रामीण और शहरी बाजारों में लगभग समान पैठ है। वे भारत में प्रतिष्ठित ब्रांड लॉन्च करते रहे हैं और प्रत्येक इंजन प्रकार की कारों में मजबूती से मौजूद हैं। LPK सिक्योरिटीज का मानना है कि यह मारुति सुजुकी की तरह ही भारतीय बाजार में सफल हो सकती है।

हुंडई का वैल्यूएशन

एलकेपी सिक्योरिटीज लिमिटेड के इक्विटी रिसर्च एनालिस्ट अश्विन पाटिल ने हुंडई आईपीओ की मारुति सुजुकी, टाटा मोटर्स और महिंद्रा एंड महिंद्रा (M&M) के वैल्यूएशन से तुलना पर अपनी राय जाहिर की। उन्होंने कहा कि, 'अगर वैल्यूएशन के लिहाज से देखें, तो तुलना सिर्फ मारुति सुजुकी इंडिया और हुंडई मोटर इंडिया के बीच हो सकती है, क्योंकि यही दोनों सिर्फ पैसेंजर व्हीकल सेगमेंट में हैं। टाटा मोटर्स और महिंद्रा एंड महिंद्रा जैसी कंपनियां कमर्शियल व्हीकल भी बनाती हैं। इसलिए उनसे तुलना करने पर सही वैल्यूएशन नहीं मिलेगा।'

उन्होंने वैल्यूएशन पर आगे कहा, 'जहां तक मारुति का सवाल है, यह FY 24 की आय के 29x-30x पर कारोबार कर रहा है। वहीं, HMI अपने IPO प्राइस बैंड की अपर लिमिट यानी 1960 पर 26x पर कारोबार कर रहा है। यह मुझे वाजिब लगता है। हुंडई मोटर्स के साथ 15 फीसदी बाजार हिस्सेदारी, मजबूत रिटर्न अनुपात, 13%+ मार्जिन, SUV सेगमेंट से आने वाले 68 फीसदी वॉल्यूम जैसे कम पॉजिटिव फैक्टर हैं। इसे लॉन्ग टर्म के लिए सब्सक्राइब किया जा सकता है।'

नोएल टाटा होंगे रतन टाटा के उत्तराधिकारी, टाटा ट्रस्ट की मीटिंग में हुआ फैसला

नोएल टाटा अब टाटा ट्रस्ट के चेयरमैन होंगे। देहांत से पहले यह जिम्मेदारी रतन टाटा संभाल रहे थे। टाटा ग्रुप की परोपकारी संस्थाओं का समूह टाटा ट्रस्ट है। इसकी 13 लाख करोड़ रुपये के रेवेन्यू वाले टाटा ग्रुप में सबसे अधिक 66 फीसदी की हिस्सेदारी है। टाटा ट्रस्ट के तहत आने वाले सर दोराबजी टाटा ट्रस्ट और सर रतन टाटा ट्रस्ट के पास टाटा संस के 52 फीसदी स्टेक हैं।

नई दिल्ली। रतन टाटा के सौतेले भाई नोएल टाटा अब उनकी विरासत संभालेंगे। टाटा ट्रस्ट ने एक मीटिंग में नोएल टाटा को नया चेयरमैन बनाने का एलान किया है। देहांत से पहले रतन टाटा ही टाटा ट्रस्ट के प्रमुख थे। अभी टाटा ग्रुप की सबसे बड़ी कंपनी टाटा संस है, लेकिन टाटा ट्रस्ट मैनेजमेंट के मामले में इससे भी ऊपर है।

टाटा ट्रस्ट असल में टाटा ग्रुप की परोपकारी संस्थाओं का समूह है। इसकी 13 लाख करोड़ रुपये के रेवेन्यू वाले टाटा ग्रुप में सबसे अधिक 66 फीसदी की हिस्सेदारी है। टाटा ट्रस्ट के तहत आने वाले सर दोराबजी टाटा ट्रस्ट और सर रतन टाटा ट्रस्ट के पास ही टाटा संस की 52 फीसदी स्टेक है।

रतन टाटा ने किसी को नहीं बनाया था उत्तराधिकारी

पद्म विभूषण से सम्मानित दिग्गज कारोबारी रतन टाटा का बुधवार देर रात देहांत हो गया। उनका गुरुवार को अंतिम संस्कार हुआ। रतन टाटा ने देहांत से पहले किसी को अपना उत्तराधिकारी नहीं बनाया था। ऐसे में रतन टाटा के उत्तराधिकारी का फैसला टाटा ट्रस्ट की मीटिंग में हुआ। इसमें नोएल टाटा को नया चेयमैन बनाया गया।

नोएल टाटा को टाटा ट्रस्ट का चेयरमैन बनाने का फैसला काफी अहम है, क्योंकि इसमें एविएशन से लेकर ऑटोमोबाइल तक के इंडस्ट्री में डाइवर्सिफाइड पोर्टफोलियो शामिल है। नोएल टाटा के चेयरमैन नियुक्त होने से शेयरधारकों के बीच यह संदेश गया है कि संस्थापक परिवार का कोई सदस्य ही परोपकारी संगठन का नेतृत्व कर रहा है। इसने कारोबारी साल 2023 के दौरान लगभग 56 मिलियन डॉलर (470 करोड़ रुपये) का दान दिया है।

टाटा संस और टाटा ट्रस्ट दोनों के चेयरमैन रहे रतन

रतन टाटा ऐसे आखिरी शख्स रहे, जिन्होंने टाटा संस और टाटा ट्रस्ट दोनों के चेयरमैन की भूमिका निभाई। लेकिन, टाटा ग्रुप के आर्टिकल ऑफ एसोसिएशन में 2022 में संशोधन किया गया। नए संशोधन के मुताबिक, अब एक ही व्यक्ति के दोनों पद पर रहने पर रोक लगा दी गई।

यूं ही धीर गंभीर खड़ा रावण....

हरिहर सिंह चौहान इन्दौर

बुराई पर सच्चाई की जीत हमेशा से होती रही है। तभी तो विजयदशमी पर्व दशहरा सदियों से मनाया जाता रहा है। अधर्म की सत्ता वह पाप का घड़ा भरता ही है। अति का नतीजा भी बुराई का प्रतिक ही है। दशहरे पर फिर भगवान मार्यदा पुरषोत्तम श्री राम द्वारा बुराई का यह रावण जलाया जायेगा। क्या रावण को मरना अच्छा लगता है वह अमृत्व की चाह में बार बार आता है। लेकिन वह प्रखंड विद्वान रावण वह अपनी बात कहने में पीछे नहीं रहता है। इस बार वह फिर पुतलों के मध्यम से खड़ा हो गया।

वर्तमान आधुनिक युग में मनुष्य से वह कहता है। अरे आप लोग इतने नास्तिक कैसे हो गए। धर्म कर्म की धारा पर कलयुगी युग के पाप का यह रूप बहुत ही भयानक हो रहा है। काले काले कारनामे में गहराई में डुबता जा रहा। कब समझोगे सच्चाई की बात जब मुझ जैसे दानव अपनी सत्ता नहीं चला पाया पापी राक्षस व दानव के साथ तो आप किस तरह चलाएंगे ? इसी बीच एक सज्जन आता है और कहता है रावण आप हमें ज्ञान मत दो यह सब बहुत ज्ञानी है। उस नादान मनुष्य की बात सुनकर रावण हटहास करता है। फिर बोलता है अरे नादान अज्ञानी इतना होशियार मत बनो तुम सभी प्राणी भटकें हुए हो तुमसे गुगल ज्ञान की बात करना ठीक नहीं है। डिजिटल युग में मोबाइल के आदि लोग लंका के राजा रावण से बात कर रहे हो। में सब जानता हूं क्या क्या हेराफेरी व गोलमाल चलता है धरती पर में ऐसे ही नहीं हर साल आ खड़ा हो जाता हूं। में भी त्रिकालदर्शी हूं। रावण की ललकार सुनकर वह सज्जन दूर चला जाता है। इसी बीच रावण दहन कार्यक्रम शुरू होता है राजनेताओं का जमावड़ा लगना शुरू होता है। बड़े बड़े सफेदपोश व्यक्ति राजनेता उपास्थित हों चुके हैं। मेरे पास लगें मंच पर वह संचालक महोदय कार्यक्रम में आए हुए अतिथियों के बारे में बताता है। अध्यक्षता के पटपुरुष रत्नों में रत्न है तो मुख्य अतिथि न्याय के पटाधीश जो अब सफेदी से सफेद हो चुकें हैं वह उपास्थित हों गए हैं। संकलनकर्ता के बोल वचन के साथ थोड़ी थोड़ी देर में चाकरी आनार पटाखे फोड़े जातें हैं असमान जो रोशनी से जगमगाया दहन स्थल में माहौल बन रहा था ।इसे देख फिर रावण मुस्कराते हुए हटहास करता है और बोलता है वह रे दुनिया वालों अपने अन्तर्मन की बुराईयों को जो नहीं मिटा पाएं वह यहां मुझे जलाने आये है ? धीर-गंभीर खड़ा रावण सोचता है कब अवतारी आयेंगे धरती के पाप का अंत करने। हे प्रभु राम आज चारों ओर पाप बढ़ रहा है अब आप को आना ही होगा।

हजारों द्रोपदी अपनी लाज की रक्षा के लिए चक्रधारी तीनों लोक के ईश्वर का अवगाहन कर रही है धरती पर पाप प्रभाव बढ़ गया है लोग चोरी फरेब झूठ लालच माया लोभ की बुराईयों की बेड़ियों में जकड़ें हुए हैं उन्हें इस बंधन से मुक्ति के लिए श्री राम आप को आना ही होगा। जिस प्रकार मेरे कर्म का फल अमर होने के बावजूद आप ने न्याय पूर्वक किया था और आज तक आप दशहरे पर मुझे मरते हों उसी प्रकार धरती के इन मनुष्य की बुराईयों का दहन करो। इसके बाद अब वह घड़ी आ ही गई है जब मेरे पापों का झरन करने मुझ रावण को मारकर पूरी दुनिया में दशहरे की खुशियां मनाई जायेगी। मुझे तो हर साल यूं ही धीर गंभीर खड़ा रहकर भटकते जा रहें धरतीवासियों को सच्चाई की राह दिखानी ही होगी । अगर नहीं दिखा पाया तो मेरे जैसा हाल बुराईयों का नतीजा ऐसा ना हो। हर बार बुराई का प्रतिक मुझे जलाते हैं कहीं आप को भी नहीं ? नाकारात्मक विचार उसके पक्ष से हमेशा नुकसान ही होता है इसलिए हमेशा सच्चाई व सकारात्मक ऊर्जा से भरपूर रहे और खुशीयों का यह उल्हास बना रहे।

पराली जलाने पर अब जाना पड़ेगा जेल

पराली जलाने पर अब किसानों को सिर्फ कानूनी कार्यवाही का ही सामना नहीं करना पड़ेगा बल्कि जेल भी जाना पड़ सकता है। वायु गुणवत्ता प्रबंधन आयोग ने पराली जलाने की घटनाओं पर पूर्णतया रोक लगाने का लक्ष्य निर्धारित किया है। आयोग ने दिल्ली हरियाणा पंजाब उत्तर प्रदेश और राजस्थान के जिला अधिकारियों को विशेष अधिकार प्रदान किए हैं। कहीं भी पराली जले तो दोषी के खिलाफ कानूनी कार्रवाई की जाएगी।

नई दिल्ली। पराली जलाने पर अब किसानों को न सिर्फ कानूनी कार्रवाई का सामना करना पड़ेगा बल्कि जेल भी जाना पड़ सकता है। सुप्रीम कोर्ट की कड़ी फटकार के बाद वायु गुणवत्ता प्रबंधन आयोग (सीएक्यूएम) ने बिल्कुल सख्त रुख अख्तियार कर लिया है। साथ ही पराली जलाने की घटनाओं पर पूर्णतया रोक लगाने का लक्ष्य निर्धारित किया है। जानकारी के मुताबिक राष्ट्रीय राजधानी और आसपास के क्षेत्रों में वायु गुणवत्ता प्रबंधन अधिनियम 2021 की धारा 14 (2) के तहत सीएक्यूएम ने बृहस्पतिवार को हरियाणा, पंजाब, राजस्थान, उत्तर प्रदेश और दिल्ली के सभी जिला अधिकारियों को विशेष अधिकार प्रदान किए हैं। आयोग के सदस्य सचिव अरविंद नौटियाल द्वारा उक्त राज्यों के मुख्य सचिवों को जारी किए गए निर्देशों में पराली जलाने की घटनाएं पूरी तरह से खत्म करने को कहा गया है। जिला उपायुक्त, जिला कलेक्टर और जिला मजिस्ट्रेट को स्पष्ट शब्दों में कहा गया है कि अगर कहीं भी पराली जले तो दोषी के खिलाफ कानूनी कार्रवाई की जाए। पुलिस में एफआइआर दर्ज कराने के साथ- साथ सख्त कार्रवाई भी सुनिश्चित की जाए। यहां तक कि इस दिशा में लापरवाही बरतने के लिए छोटे-बड़े हर स्तर के अधिकारी के खिलाफ भी कार्रवाई सुनिश्चित की जाए। सीएक्यूएम ने एनसीआर में शामिल सभी राज्य सरकारों को भी धान की पराली जलाने पर हर हाल में रोक लगाने का निर्देश दिया है।

सीरवी समाज कोरेमुला बडेर में नवरात्रि महोत्सव के हवन यज्ञ व पुणोहुति के उपलक्ष्य में उपस्थित रहे कोरेमुला सीरवी समाज बडेर अध्यक्ष कालुराम काग सचिव डायाराम लचेटा, हुकमाराम सेपटा, बाबूलाल काग, भीकाराम पंवार, सुरेश सेपटा पंडित बाबूलाल शर्मा व समाज बन्धु पुणोहुति देकर कार्यक्रम सम्पन्न

कांतबांजी विधायक लक्ष्मण बाघ उच्च न्यायालय के आदेश का पक्ष नहीं ले सकते

मनोरंजन सासमल , स्टेट हेड ओड़िशा

भुबनेस्वर : कांटाबांजी चुनाव झूठे आरोप का मामला। कांटाबांजी विधायक लक्ष्मण बाघ हाईकोर्ट में अपना बचाव नहीं कर सके। 3 बार कोर्ट के नोटिस को नजरअंदाज करने के बाद विधायक लक्ष्मण बाघ को हाईकोर्ट ने केस से बाहर कर दिया था।

गौरतलब है कि विधानसभा चुनाव में लक्ष्मण बाग ने तत्कालीन मुख्यमंत्री नवीन पटनायक को कांटाबांजी में हराया था।अब उन्होंने गिरिराज सिंह माझी नाम के एक वोटर पर चुनावी घोषणा पत्र में गलत जानकारी देने का आरोप लगाते हुए केस दर्ज कराया है और उन्होंने हाई कोर्ट का दरवाजा खटखटाकर अपना विधायक पद रद्द करने की गुहार लगाई है। सबसे पहले हाई कोर्ट ने श्री बाघ को स्पीड पोस्ट का जवाब देने के लिए नोटिस जारी किया। लेकिन उन्होंने इस नोटिस को स्वीकार नहीं किया। बाद में हाई कोर्ट ने बलांगीर के जिला जज के जरिए विधायक को नोटिस भेजा। उन्होंने इसे भी स्वीकार नहीं किया। अंत में उन्होंने हाई कोर्ट रजिस्ट्री के जरिए ईमेल से जवाब देने का जिक्र किया। हालांकि, विधायक श्री बाघ ने न तो इस ई-मेल का जवाब दिया और न ही अपने वकील के माध्यम से कोर्ट में अपने मामले की पैरवी की। नतीजतन, हाई कोर्ट ने आदेश दिया है कि मामले की सुनवाई एकतरफा की जाएगी।

पर्यावरण पाठशाला: युवाओं के बीच प्रकृति शिक्षा का महत्व

आज के तेजी से बदलते और शहरीकरण से प्रभावित समाज में प्रकृति से हमारा संबंध दिन-प्रतिदिन कमजोर होता जा रहा है। आधुनिक जीवनशैली और तकनीक के अति प्रयोग ने हमें प्रकृति से दूर कर दिया है। ऐसे में 'पर्यावरण पाठशाला' का उद्देश्य युवाओं को प्रकृति के प्रति जागरूक और संवेदनशील बनाना है, ताकि वे प्रकृति के महत्व को समझ सकें और पर्यावरण संरक्षण के प्रति अपनी जिम्मेदारियों को पहचानें।

प्रकृति शिक्षा का महत्व

प्रकृति शिक्षा न केवल पर्यावरण के बारे में जानकारी प्रदान करती है, बल्कि जीवन की मौलिक शिक्षाएं भी देती है। वृक्ष, पहाड़, नदियां, पक्षी और अन्य जीव-जंतु हमें सिखाते हैं कि संतुलन, सहनशीलता और सामंजस्य के बिना जीवन संभव नहीं है। जब बच्चे और युवा प्रकृति के साथ समय बिताते हैं, तो वे धरती, जल, वायु और जीव-जंतुओं के महत्व को समझते हैं।

युवाओं में प्रकृति के प्रति जागरूकता की आवश्यकता

आज के युवा समाज का भविष्य हैं, और यदि उन्हें समय रहते पर्यावरण के प्रति जागरूक नहीं किया गया, तो आने वाली पीढ़ियों को एक असंतुलित और प्रदूषित विश्व का सामना करना पड़ सकता है। युवाओं को प्रकृति से जोड़ने के लिए उन्हें पर्यावरणीय गतिविधियों में शामिल करना अत्यंत आवश्यक है। स्कूलों और कॉलेजों में 'पर्यावरण पाठशाला' जैसे कार्यक्रम चलाकर युवाओं को पेड़-पौधों, जैव विविधता, जल संरक्षण और अपशिष्ट प्रबंधन के प्रति शिक्षित किया जा सकता है।

प्रकृति शिक्षा के माध्यम से जीवन मूल्य

प्रकृति केवल पर्यावरण की देखभाल सिखाती है, बल्कि जीवन के मूल्यों का पाठ भी पढ़ाती है। एक वृक्ष हमें सिखाता है कि बिना किसी स्वार्थ के कैसे दूसरों की मदद की जाए। नदियां हमें निरंतर बहने और बिना रुके जीवन में आगे बढ़ने का संदेश देती हैं। पक्षी हमें स्वतंत्रता, आत्मनिर्भरता और एकता का महत्त्व बताते हैं। इन प्राकृतिक तत्वों से प्रेरणा लेकर युवा न केवल अपने व्यक्तिगत जीवन में सुधार कर सकते हैं, बल्कि समाज के प्रति अपने कर्तव्यों को भी समझ सकते हैं।

'पर्यावरण पाठशाला' के माध्यम से युवाओं को यह समझने की आवश्यकता है कि प्रकृति हमारे जीवन का अभिन्न अंग है। इसका संरक्षण और देखभाल हमारी जिम्मेदारी है। यदि आज के युवा पर्यावरण के प्रति सजग हो जाएंगे, तो वे एक स्वच्छ, हरित और संतुलित विश्व के निर्माण में महत्वपूर्ण योगदान देंगे। ऐसे में आवश्यक है कि हम उन्हें प्रकृति के साथ समय बिताने और उसके प्रति संवेदनशील बनने का अवसर प्रदान करें। पर्यावरण पाठशाला केवल शिक्षा का माध्यम नहीं है, बल्कि यह जीवन के मूल्यों को समझने और धरती के प्रति अपने कर्तव्यों को निभाने का एक संकल्प भी है।

डॉ. अंकुर शरण
(पर्यावरण संरक्षण एवं जीवन शिक्षा के समर्थक)

पूजा मंडप घूमेंगे शक्ति बाहिन, महिला और बच्चे को रोमियो से सुरक्षा देगी

मनोरंजन सासमल , स्टेट हेड ओड़िशा

भुबनेश्वर : शक्ति बहिनी पूजा में रोड रोमियो को नष्ट कर देगी। कमिश्नरेट पुलिस द्वारा गुरुवार को ₹शक्ति वाहिनी₹ का गठन किया गया है, यह दुर्गा पूजा के दौरान महिलाओं और बच्चों की सुरक्षा पर ध्यान केंद्रित करेगी और सड़क पर घूमने वालों पर भी नजर रखेगी।बल में 40 पुलिस अधिकारी हैं।वे 20 मोटरसाइकिलों पर सवार होकर विभिन्न पूजा मंडपों का भ्रमण करेंगे। गश्ती दल महिलाओं के खिलाफ अपराधों को रोकने या अकेले बच्चों को बचाने में सहायता करेगा। यह गश्ती प्रणाली महिलाओं के खिलाफ अपराधों को रोकने के लिए सुरक्षा जाल के रूप में कार्य करेगी। प्रमुख पूजा मंडपों पर महिला गश्ती दल तैनात किये जायेंगे। टीम की प्रभारी एक महिला एसआई (पीएसआई) होंगी।

सरायकेला में उत्कलीय परंपरानुसार 16 दिनों की दुर्गा

कार्तिक कुमार परिच्छा

सरायकेला , झारखंड स्थित 26 उत्कलीय देशी रियासतों में से झारखंड स्थित 2 सरायकेला खरसावां के जिला मुख्यालय स्थित ऐतिहासिक मजरा घाट में सरायकेला राजा प्रताप आदित्य सिंहदेव तलवारों को धोकर खंडाधुआ के साथ वनदुर्गा पारंपरिक तरीके से आवाहन का शुभारंभ किया गया । इसके साथ विगत बारह दिनों से चली आ रही सोलह दिन तक चलने वाली दुर्गा पूजा अन्तिम चरण पर आ गया । सरायकेला पब्लिक दुर्गा पूजा कमेटी का ऐतिहासिक पूजा उत्सव जो तांत्रिक मत से चलता है इसमें हजारों की भीड़ देखी जा रही है ।

जगन्नाथ संस्कृति से ओत प्रोत दुर्गा पूजा उत्सव झारखंड के इस उड़िया भाषी इलाके में राज पैलेस स्थित मां पाउड़ी के प्रांगण स्थित दुर्गा मंदिर में जोर दार तरीके से जारी है । कल खरकाई नदी के तट से राजा सरायकेला प्रताप आदित्य सिंहदेव ने जहां अपने तलवारों को धोकर दुर्गा का आह्वान किया वही अन्य क्षत्रिय लोगों ने भी अपनी पुस्तैनी तलवारों को धोकर यह एहसास दिलाते हुए पीछे नहीं हटे कि हजारों साल पुरानी अपनी परंपरा को आज भी वे नहीं भूले हैं । यह राजा के सैनिक गांव में भी देखी गयी , जहां का नजारा बड़ा ही दिलचस्प रहा । सनद रहे की सरायकेला खरसावां नामक दो देशी रियासतों का विलय भारतीय अधिराज में उड़ीसा में रखे जाने हेतु कर दिया गया था परंतु एन केन प्रकारेण इसे बिहार में लाकर इसकी तमाम धार्मिक संस्कृति एवं भाषा ई मर्यादा को सरकारों ने खत्म कर दिया है । परंतु अभी यह उत्कल यह दुर्गा पूजा की भांति 16 दिन तक चलता है जहां 16 दिनों तक राजघराने मसे प्रसाद भी मिलता है ।

इसके साथ साथ सरायकेला के अन्य जगहों पर भी दुर्गा पूजा का शुभारंभ विधिवत हुआ है । सरकारी पूजा कमेटी इनमें हसाहुडी, इंद्रटांडी में दो जगह तथा गेस्टहाऊस इलाका में भी हुआ है । सरायकेला अनुमंडल अधिकारी श्री महतो ने बताया कि वे दुर्गा मां से स्थानीय जनमानस की खुशहाली मांगे हैं ।

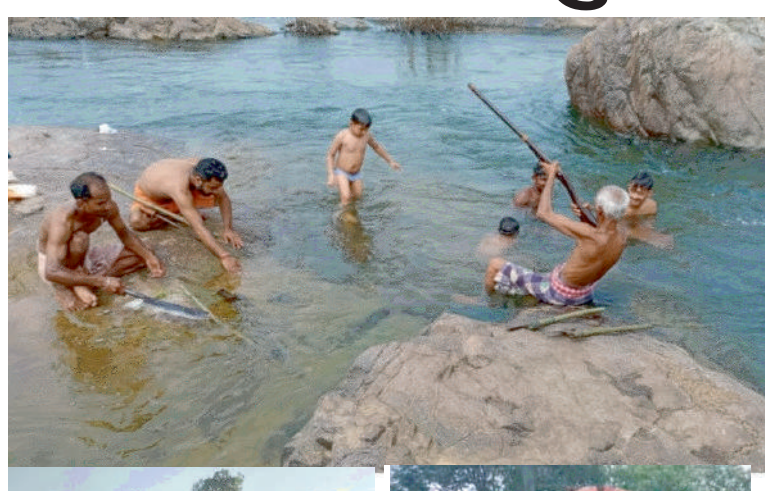

ग़ज़ल : वज़ूद और बेज़ार

गुलशन से ही गुल होते रहें हैं रवां।
ये तभी सूझता है जब होते हैं जवां।

मैं नहीं था अश्क का कोई कतरा।
नजर से मुझे गिराया खूब अखरा।

मुझे बता दिया मेरा क्या वज़ूद है?
मैंने इंकार न किया सब कबूल है?

हमें आपसे बहुत उम्मीदें-वफ़ा थी।
नहीं था पता तुम इतनी ख़फ़ा थी।

हर मोड़ पर तूने दिया है मुझे दगा।
लो अच्छा ही हुआ मैं नहीं था सगा।

मैं तो तुझसे अब भी बेज़ार नहीं हूँ।
खुशी है मुझे तेरा गुनहगार नहीं हूँ।

संजय एम. तराणेकर
(कवि, लेखक व समीक्षक)
31, संजय नगर, इंदौर
(मध्यप्रदेश)
98260-25986

स्वामी, मुद्रक, प्रकाशक एवं संपादक संजय कुमार बाटला द्वारा इम्प्रेशंस प्रिंटिंग एंड पैकेजिंग लिमिटेड, सी-18,19,20 सेक्टर 59, नोएडा (उत्तर प्रदेश) से मुद्रित एवं 3, प्रियदर्शनी अपार्टमेंट ए-4, पश्चिमी विहार, नई दिल्ली- 110063 से प्रकाशित। सम्पर्क : 9212122095, 9811902095. newstransportvishesh@gmail.com
(इस अंक में प्रकाशित समस्त समाचारों के चयन एवं संपादन पी.आर.बी. एक्ट के अंतर्गत उत्तरदायी) किसी भी कानूनी विवाद की स्थिति में निपटारा दिल्ली के न्यायालय के अधीन होंगे। RNI No :- DELHIN/2023/86499. DCP Licensing Number F.2 (P-2) Press/2023